Chapter-2

दूसरा अध्याय - उपन्यासों की कथावस्तु

मिश्र जी के कथा साहित्य का परिचय :

उपन्यास -: स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में आशातीत प्रगति के साथ अनेक नई शक्तियों का उदय होता है । पराधीनता की अवस्था में अवरुद्ध चेतनाएं विदेशी शासन के क्षेत्र से छूटते ही मानों मुक्ति पाकर तीव्रता से खिल उठी हों । साहित्यकार में पराधीनता की भावना बांध से रुकी हुई जल - राशि के समान थी । जिसके टहते ही नई चेतनाएं नई दिशाओं में अपने लिये नया मार्ग ढूंढने लगी । स्वतंत्रता पूर्व का अधिकांश उपन्यास पराधीनता की छटपटाहट में कुलबुलाता हुआ दृष्टि गत होता है । स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास में यह स्वर प्रखरतर होता हुआ प्रगति में बाधा रूप सारी रुकावटों को हटाकर अनेक प्रयोगों एवं विचारों की सामाजिक चेतना के साथ आगे बढ़ने लगा ।

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उप0 का आरम्भ उस समय से होता है । §। §जबकि भारत में राजनैतिक अस्थिरता थी । भारत का स्थायीत्व राजनैतिक संकट के खतरे में पड़ा हुआ था । जन-जन में क्रांति की भावना विद्यमान थी । स्वतंत्रता ही उनका लक्ष्य था । उस समय राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ मानसिक स्वतंत्रता की भी आवश्यकता थी । जनता जर्नादन अपने विचारों को व्यक्त करने में असमर्थ थीं । राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ ही पूरी तरह स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी । स्वतंत्रता पूर्व उपन्यासों में विषय वस्तु समाज की घटनाओं, समस्याओं एवं व्यक्ति समाज के परस्पर सम्बन्धों पर अधिक आधारित था । किन्तु स्वतंत्र्योत्तर युग में व्यक्ति में ही समाज का अध्ययन किया जाने लगा । अतः उप0 चरित्र-प्रधान होने लगा तथा उसमें आये हुए चरित्र "टाइप" होने लगे । घटनाओं, समस्याओं, कार्यों एवं विचारों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन होने लगा । स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में कथानक शुद्ध मनोवैज्ञानिकता का रूप ग्रहण करने लगे, घटनाओं को संगठित करके कथानक सुदृढ़ बनाये जाने लगे । ऐतिहासिक उपन्यासों का पूर्ण-रूपेण विकास हुआ । इस युग में आंचलिक उप0 का विशेष रूप से विकास किया गया है । इस युग में विषय वस्तु की दृष्टि से कुछ ऐसे प्रयोग हुए है । कि उप0 में कहानी का भ्रम होने लगता है । कुछ तो कहानी संग्रह मालूम पड़ते है । आलोच्य

युगीन उपन्यासों में चरित्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है । अधिकांश उप0 में चरित्र को प्रकाशित करने का प्रयत्न किया गया है । इस समय हिन्दी उपन्यासों में शिल्प के विशेष प्रयोग के फलस्वरूप बहुत अधिक मोड़ आये है । इसी प्रक्रिया में उपन्यासों को नये मार्ग का अनुसरण करना पड़ा है । शैली शिल्प के क्षेत्र में बहुत परिवर्तन भी हुए है । जैसे-वर्णनात्मक शैली के स्थान पर आत्म कथात्मक शैली डायरी शैली आदि का विशेष प्रयोग हुआ है । उपन्यासकारों का उद्देश्य किसी समस्या, घटना, चरित्र अथवा वर्णन से न होकर अभिनव प्रयोग से हो गया है । जिसने जितने भी उप0 लिखे उतने ही प्रयोग शिल्प के क्षेत्र में रहे । किसी निश्चित ढंग या पद्धति को अभाव है । इस युग में उप0 भावप्रधान न होकर शिल्प प्रधान होने लगा है । स्वतंत्र्योत्तर युगीन उप0 में कुछ ऐसे प्रयोग भी हुए थे कि सम्पूर्ण उप0 एक कहानी संग्रह मालूम होता है । इस प्रकार के उप0 में शिव प्रसाद मिश्र कृत "बहती गंगा" तथा धर्मवीर भारती कृत "सूरज का सातवां घोड़ा" आते है । उद्देश्य की दृष्टि से ये उप0 मालूम होते है ।

इस युग के लेखकों की धारणा यथार्थवादी है । वे उप0 को आदर्शों के बोझ से बोझिल नहीं बनाना चाहते । स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में व्यक्तिवादी परम्परा को विशेष प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है । जिसका श्रेय जैनेन्द्र कुमार को दिया जाता है ।

इन उपन्यासो में नायक के रूप में आंचल विशेष को ही स्वीकार किया गया हैं। इस प्रकार के उपन्यासों में फणीश्वर नाथ रेणु कृत "मैला आंचल" तथा "परती परिकथा, शिवप्रसाद मिश्र कृत बहती गंगा, उदय शंकर भट्ट कृत सागर, लहरें और मनुष्य, नागार्जुन कृत "बाबा बटेसर नाथ, वरुणके बेटे, बलचनमा, आदि प्रमुख है । 1 स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात विकसित समाजिक मनोवृत्तियों के परिवेश में उप0 को पर्याप्त समाजिक व्यापकता और मनोवैज्ञानिक गहनता अर्जित करने का अवसर प्राप्त हुआ ।

इस काल में सभी लेखकों में समाजिक यथार्थ को पहचानने का आग्रह, पलायनवादी प्रवृत्तियों को नकारने का प्रयास और परिवर्तन की आकुलता स्पष्टतया परिलक्षित होती है । 2.

आधुनिक भावबोध को समझकर आगे आने वाले लेखकों में राजेन्द्रयादव §सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, कुलटा, अनदेखे अनजान पुल तथा एक इंच मुस्कान, मन्नू भंडारी के साथ § नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु, नरेश महेता आदि लेखक है। 1960 के पश्चात हिन्दी उपन्यासों के क्षेत्र में एकदम नये लेखकों में कमलेश्वर, मोहन राकेश, सुरेश सिन्हा, निर्मल वर्मा तथा शिवानी के नाम उल्लेखनीय हैं। जन जीवन की कठोर विषमताओं, भूख, प्यास, बदले हुए मूल्य, शोषण, वैमनस्य तथा युद्ध की आंशका से संत्रस्त मानवता की बहु विधीय समस्याओं का समाधान, सेक्स तथा अहम् के दायरे में अन्वेषित हुआ है। ऐसे उपन्यासकार अज्ञेय तथा जैनेन्द्र है। "शेखर एक जीवनी" त्यागपत्र §1937§, जयवर्धन, तथा इलाचन्द्र जोशी का जहाज का पंछी §1956§ व सुबह का भूले §1951§ में पर्यावरणवाद का सशक्त चित्रण हैं। विष्णु प्रभाकर, बलवन्त सिंह भी इसी काल के उपन्यास कार हैं। श्री लाल शुक्ल शैलेश मटियानी, हिमांशु श्रीवास्तव, मनोहर चौहान, राजेन्द्र अवस्थी, रामदरश मिश्ररांगेय राघव, राही मासूम रजा, विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, पुष्पदत्त शर्मा, कमल शुक्ल, केशव प्रसाद शुक्ल, आदि की रचनाएं समकालीन भाव बोध की रचनाएं कहलाती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि इस युग के उपन्यासकार मन की परतों तथा बौद्धिक गहराइयों में भी सूक्ष्म वेत्ता की तरह उतरा है और उनमें आदमी की एक-एक रंग को पहचानने तथा उसकी नब्ज की आवाज को सुनने की कोशिश की है। 3.

आजादी-प्राप्ति के पश्चात का साहित्य दो दृष्टियों से विशेष महत्व को है। एक तो इसने हर विधा में जिये हुए जीवन सत्य पर बल दिया, दूसरे देश के उपेक्षित अंचलों की ओर इसकी दृष्टि गई।

स्वतंत्रता के बाद गांव की स्थिति बहुत विचित्र हो गयी। इसके लिये ज्यादातर लेखकों ने गांव पर हो रहे अत्याचारों, शोषण, मजदूरों की दयनीय अवस्था का वर्णन किया है। बलचमना §1953§, वरुण के बेटे §1956§ नागर्जुन ने ग्रामीण जीवन और भूमि व्यवस्था के साथ मजदूरों की दयनीय अवस्था का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। गंगा मैया §1953§ भैरव प्रसाद गुप्त ने, भारतीय सामाजिक, एवं राजनीतिक व्यवस्था के चित्रण में जमींदार द्वारा किसानो का शोषण को प्रस्तुत

किया गया है। धरती परिकथा (1957) मैला आंचल (1956) फणीश्वर नाथ रेणु ने स्वतंत्रता के पश्चात् ग्रामीण जीवन की समस्याओं को बहुत ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। वरुण के बेटे (1986), जब तक पुकारूं (1958) रांगेय राघव, सती मैया का चौरा (1959) भैरव प्रसाद गुप्त, आधा गांव (1966) राही मासूम रजा, धरती धन न अपना (1972), कभी न छोड़ें खेत (1976) जगदीश चन्द्र आदि लेखकों ने ग्रामीण जीवन पर होने वाले अत्याचारों, शोषण का यथार्थवादी वर्णन किया है।

स्वतंत्रता के बाद केवल गांव ही प्रभावित नहीं हुआ बल्कि उसका असर शहरी जीवन पर भी पड़ा। खास कर मजदूर वर्ग पर। एक ओर घोर निराशा और अंधेरेपन में दिशा हीनता का अहसास विशेष रूप से युवा वर्ग को होने लगा। जिसके जिसके अभावों और कुंठाओं ने उसे आत्मकेन्द्रित और व्यक्तिवादी बना दिया। इस आधार भूमि पर निश्चय ही कुछ सार्थक उप० लिखे गये। जिन्होंने शोषण के उस अमानवीय रूप को सामने रखा। जगदम्बा प्रसाद दीक्षित का उप० मुर्दाघर इसी प्रकार का उप० है। "जल टूटता हुआ" मिश्र जी का ऐसा उप० है। इसके अलावा अन्य लेखकों के उप० इस प्रकार है।

सूरज का सातवां घोड़ा	(1952)	धर्मवीर भारती
बूंद और समुद्र	(1956)	अमृतलाल नागर
उखड़े हुए लोग	(1957)	राजेन्द्र यादव
उसका बचपन	(1957)	कृष्ण बलदेव वैद
भूले बिसरे चित्र	(1959)	भगवती चरण वर्मा
झूठा सच	(1958-60)	यशपाल
अंधेरे बंद कमरे	(1961)	मोहन राकेश
वे दिन	(1964)	निर्मल वर्मा
अमृत और विष	(1966)	अमृतलाल नागर
कुछ जिंदगियां बेमतलब	(1969)	ओम प्रकाश दीपक
यात्राएं	(1971)	गिरिराज किशोर
बेघर	(1971)	ममता कालिया

एक चूहे की मौत	[1971]	बदीउज्जमां
अपना मोर्चा	[1973]	काशीनाथ सिंह
तमस	[1973]	भीष्म साहनी
मुर्दाघर	[1974]	जगदम्बा प्रसाद दिक्षित [4]

उप0 में शहरी जीवन के औद्योगिकरण के फलस्वरूप बढ़ती बेकारी और मंहगाई से प्रभावित व्यक्तिवाद और उसके परिणाम स्वरूप टूटते परिवार सिमटते समाजिक सम्बन्ध और बिखरते जीवन मूल्यो ने भी लगातार कथाकारों को यही भावभूमि दी ।

आज के उप0 में एक ओर मूल्यों के व्यापक विघटन समाज जीवन की अस्थिरता नैतिक मनोदृष्टि की गहन उत्क्रांति व्यक्ति-स्वातंत्र्य की भावना के दर्शन होते है । वही दूसरी ओर उसमें लोकतंत्रीय भावना, समष्टि निष्ठा तथा स्वस्थ जीवन दृष्टि का भी आभास मिल जाता है । स्वाधीनता के उपरांत भारतीय उप0 में एक नयी चेतना आयी है । और इस चेतना का प्रकाश इस रूप में दिखायी दे रहा है । कि भारतीयउप0 पात्र व्यक्ति का चित्रण न रहकर समष्टि का चित्रण बनता जा रहा है । 5.

वस्तुतः यह एकाकी साय है । तस्वीर का एक पहलू है । आज के संक्रांति युग में प्रवृत्तियों का द्वंद्व सर्वथा अनिवार्य है । एक ओर अनास्था, सन्देहवाद, विघटन है । दूसरी ओर जीवन के प्रति एक प्रकार का संतुलित दृष्टिकोण है । जिजीविषा है, नयी जीवन प्रक्रियाओं के समझने जानने का प्रयत्न है । 6.

भारतीय जीवन के यथार्थ की पहचान करने वाले उप0 गांव पर लिखे गये हो या शहर पर, उप0 की दृष्टि से उनमेअलगान्हीं किया जा सकता । जिंदगी की किसी भी गहरी सच्चाई को उसकी समग्र व्यक्तित्वशीलता के साथ मूर्त करने वाला उप0 प्रभाव शाली होता है । और यह वही उपन्यासकार कर सकता है जो अपने कथा के केन्द्र और उससे जुड़े संदर्भो को पहचानता हो और उन्हें अनुभव में उतार सका हो ।

स्वातंत्र्योत्तर के समय में ज्यादातर आंचलिक जीवन को समापित कर भारतीय जीवन के उभरते हुए संक्रात होते हुए अनेक अनुभवों, सम्बन्धों और मूल्य

संघर्षों का संश्लिष्ट चित्रण किया है । साथ ही वे शहरी उप0 भी उतने ही महत्व के है । जो नकली व्यक्ति वादी आधुनिकता के फार्मूलों से गुजरने के स्थान पर शहर की सामाजिक जिंदगी की तस्वीर को बहुत ही गहराई से उभारते है । उप0 की सबसे बड़ी शक्ति है - समृद्ध जीवनानुभव, आन्दोलनों के प्रति नहीं, बल्कि समाजिक जीवन की सच्चाइयों के प्रति समर्पण ।

स्वाधीनता के बाद उप0 तो बहुत सारे लिखे गये किन्तु उपलब्धि के शिखरों को वे ही छू सके जो समाजिक जीवन के अनुभवों के प्रति समर्पित रहे । जिनकी दृष्टि की आधुनिकता एक मुद्रा की तरह टंकी नहीं रही बल्कि सघन जीवन यथार्थ के अनुभवों के बीच एक रचनात्मक शक्तिबन कर व्यापत रही । इस प्रकार मैला-आंचल, को स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उप0 की एक ऐसी कृति की जिससे न केवल उप0 की नई शुरुआत हुई बल्कि स्वंय एक उपलब्धि बन गयी । इस प्रकार मैला आंचल हिन्दी का पहला उपन्यास था । जो एक विशेष जिंदगी को अनुभवमूलक गहराइयों से सामान्य जीवन के अनुभव कथा को जोड़ती है । 7.

प्रेमचन्द ने गांव की धरती, गांव के पात्र और गांव के जीवन के बारे में हिन्दी कथा साहित्य के लिये अनेक सम्भावनाओं के द्वार खोले । स्वतंत्रता प्रेरित से पूर्व उन्होने गांव के जीवन पर आधारित उपन्यासों की नींव डाल चुके थे । उनके बाद प्रेमचन्द परवर्ती उपन्यासकारों के समविष्ट केन्द्रित उप0 की इस धारा को यथा सम्भव आगे बढ़ाया । छठें व सातवें दशक में मैला आंचल के साथ इस दिशा में लेखन की एक सुनिश्चित शुरुआत हुई । गांव के जीवन पर लिखना एक उपेक्षा का विषय नहीं रह गया था । जो रचनाकार गांव में ही जन्में, बड़े हुए, उन्होने अपने अनुभवों से गांव जीवन को अपनी रचनाओ में स्थापित करने की कोशिश की । स्वतंत्रता के बाद जन-जीवन में आये भारी बदलाव की तीव्र गति और व्यापक विस्तृति ने रचनाकार को इस बात के लिये विवश किया कि वह जीवन सत्यों की तलाश किसी व्यक्ति, स्थान या घटना के रूप में न करें । उन्होने केवल नगरों के जीवन अनुभवों के ही नहीं, अपितु गांव के रहन-सहन, आचार, विचार, राजनीति आर्थिक स्पन्दन को गांव की भाषा में प्रकट किया ।

आंचलिक उपन्यासकारों में रामदरश मिश्र का नाम इसलिये विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि वे ग्रामांचल के समर्पित रचनाकार है। उनकी कविताएं, कहानियां, उपन्यास, गांव की धरती से जुड़े है। उनके प्रत्येक उप0 में गांव कहीं न कही किसी न किसी रूप में विद्यमान है। पानी के प्राचीन, जल टूटता हुआ, सूखता तालाब, पूरी तरह गांव के जीवन को केन्द्र में रख कर लिखे गये है। जबकि बीच का समय, आकाश की छत, अपने लोग, रात का सफर, उपन्यासों ने ग्रामीण जीवन की अनुभूतियों ने काफी स्थान लिया है। 8.

कथा साहित्य का वास्तविक उद्देश्य मानव अनुभव में असामान्य के प्रति रूचि को संतुष्ट कर आनन्द प्रदान करना है। अतः कथा लेखक की समस्या है। असामान्य और सामान्य के बीच संतुलन स्थापित करना जिससे एक ओर वह पाठकों का रंजन कर सकें। दूसरी ओर यथार्थ की प्रतीति करा सके क्योंकि प्रभावित करने के लिये पहले विश्वास उत्पन्न करना आवश्यक है। 9.

" we must first believe before we can be affected " - Hurd letter on chivalary & Romance - letter

यहां पर मिश्र जी उप0 के माध्यम से अपने जीवन के कटु अनुभव को प्रस्तुत किया है। उन्होंने जो भोगा, देखा व समझा है। उसी को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। उनके पैर हमेशा अपने अनुभव की जमीन पर ही रहते है।

" पानी के प्राचीर उपन्यास "

राम दरश मिश्र जी का पहला उपन्यास "पानी के प्राचीर" 1961 में हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी से प्रकाशित हुआ है। जिसका द्वितीय संस्करण वाणी प्रकाशन, दिल्ली से 1986 में हुआ।

इस उपन्यास में मिश्र जी ने गांधी वादी प्रभाव दिखाया है। इसमें गांव की भूख, बेकारी, दरिद्रता, बाढ़, गुलामी से घिरा हुआ - जमींदारों के शोषण से शोषित भी आजादी पाने के सपने दिखते हुए चलता है। सन् 42 के आन्दोलन चित्रित किया गया है। स्वतंत्रता से पहले जमींदारों द्वारा होने वाले अत्याचारों को बताया गया है। गांव का मुखिया सबके बीच में फूट डलवा कर उनको लड़ाता है। उसका आंतक सोर गांव पर छाया हुआ है। कोई भी उसके खिलाफ कुछ बोल नहीं सकता है। उसका लड़का महेश भी अपने इसी बड़प्पन का फायदा उठाकर अपने से कमजोर लोगों को मारता व परेशान करता रह ता है। इन अत्याचारों का विरोध करने वाला नीरू सुमेश पांडे का बेटा भी महेश के साथ पढ़ता था। लेकिन वहबहुत ही तेज और होशियार लड़का था।

गांव में जो स्कूल चलते थे। उनके मास्तिरों को तनखाह नहीं दी जाती थी। उनसे कहा जाता था यह तो देश सेवा है। गांव के लड़के को ज्ञान देकर देश का उद्धार होगा। परन्तु देश-सेवा के अलावा उनको गुजर-बसर के लिये तो कुछ चाहिये था। इसके लिये मास्तरों ने स्कूल में आना बंद कर दिया जिससे स्कूल बंद होने लगे। लोगों के पास इतना पैसा नहीं था। जो वह अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये दूसरे शहर गोरखपुर भेज सकें। नीरू को भी पढ़ने का बहुत शौक था। लेकिन उसके पास घर की समस्याएं थी, वह अपने सभी भाई-बहिनों में बड़ा था। खेत रेहन पर थे तथा मुखिया का सूद के साथ मूल धन भी बढ़ता जा रहा था। उसको अपनी बहिन की शादी करनी थी तथा अपने छोटे भाई केशव को पढ़ा कर अपनी इच्छा भी पूरी करनी थी। अतः पढ़ाई छोड़कर नौकरी करने के लिये प्राइमरी स्कूल की मास्टरों के चुनाव की प्रतियोगिता में भाग लेता है। परन्तु यहां पर नौकरी योग्यता के आधार पर न देकर सिफारिश व रिश्वत के आधार

पर दी जाती है ।

बैजनाथ नामक एक ब्राम्हन ने चमारिन विंदिया के साथ नाता जोड़ रखा था । बिंदिया देखने में सुन्दर व जवान थी । जिसके लिये सभी गांव वाले उसको ललचाई नजर से देखते थे । लेकिन वह किसी के आगे बैजनाथ के सिवा चारा ही नहीं डालती है । बैजनाथ ताकतवर था । इसलिये गांव वाले उसको कुछ कहते हुए भी डरते थे । एक दिन दरोगा बैजनाथ को इसी सिल सिले में लेने आते है । तो मुखियां दोनों तरफ तरफ से पैसे वसूल कर मामला दबा देता है । तथा बैजनाथ के सामने उनका बड़ा अहसान मंद बना रहा । इसके साथ बैजनाथ उसका मित्र बना रहे । इसके लिये वह गांव वालों के सामने यह प्रस्ताव रखता है कि यदि बैजू गंगा में नहा आये, भागवत सुन और फिर गांव भर को दो दिन भोज दे तो उसके सारे पाप धुल जायेगें, फिर उसको नाते-बिरादरी में वापिस लिया जायेगा । बिंदिया को भी गांव से अलग कर दिया जायेगा । ताकि वह फिर बैजू से सम्बन्ध नहीं रख सकें । गांव वाले भी खाना खाने की लालच में मुखिया की हां में हां मिला देते है । बैजू भी अपनी बहिन की शादी की खातिर चुपचाप सब कुछ खर्च सहन कर लेता है ।

सुमेश पांडे बैजू का काका था वह इस भोज का विरोध करता है । आदमी अपने कर्मो से शुद्ध होता है । गंगा नहाने या भागवत सुनने से नहीं शुद्ध होता है । मुखिया बैजू व सुमेश पांडे में फूट भी डलवाता है तथा बैजू को उससाकर उसके घर में आग भी लगवाता है ।

दूसरी ओर जब मुखिया बिंदिया को बैजू का साथ छोड़ने के लिय कहता है । जब वह नहीं मानती है तो उसे घर के उजाड़ने की धमकी देता है । जब वह उसके बैटे व अन्य सभी लोगो की पोल खोलती है । कि वे सब भी उसके साथ संबन्ध बनाना चाहते है । तो मुखिया उसका बहुत पिटवाता है । तथा उसकी झोपड़ी भी उखड़वा देता है । सच्चाई बोलने पर बुरी तरह पीटा जाता है । सारे लोग खड़े होकर तमाशा देखते है । कोई भी बीच में पड़कर उसको बचाता नहीं है । एक लड़की को इस तरह क्यों पीट रहे हो । तभी मलिन्द नामक एक पढ़ा-लिखा युवक जो यह सब अन्यास को देखकर उबल पड़ा । वह बिंदिया

को अपने यहां की जमीन में संरक्षण देता है । मलिन्द का बाप घनश्याम तिवारी के पास काफी अच्छी जायदाद थी । उसके लड़के भी पढ़ लिख गये थे । मुखिया इनके पढ़ने लिखने की धाक देखकर जलता भुनता था । क्योंकि उसके स्वयं का लड़का नालायक बना रहा । मलिन्द नीरू को भी सलाह मशवरा देकर उसका उत्साहित करता रहता था । मलिन्द की बहिन संध्या व नीरू दोनों ही अच्छे दोस्त थे । दोनों के मन में एक दूसरे के लिये प्रेम की भावना थी । नीरू गरीब घर का लड़का होने के कारण उसका मेल भी सम्भव नहीं था ।

उन दिनों अभी आजादी प्राप्त नहीं हुई थी अतः गांव के लोग गनपति जैसे नेता आन्दोलनों में भाग ले रहे थे। उनको यह विश्वास था कि आजादी मिलने के बाद यह छोटे - बड़े का भेदभाव मिट जायेगा । सबके साथ समान न्याय होगा. कोई किसी की जमीन में दखल अंदाज नहीं करेगा । जमींदार प्रथा भी समाप्त हो जायेगी ।

गांव में दिन-रात पानी बरस रहा था । तालाब-पोखर सभी पानी से भर रहे थे । सब जगह जल प्रलय दिखायी देती थी । लोग खाने के लिये एक-एक दाने को मोहताज हो रहे थे । नीरू ने जब अपने परिवार को भूख से इस तरह बिलखते देखा तो उसने गजेन्द्र बाबु के यहां नौकरी कर ली । पहले तो वह काम देखकर पसीज गया । किसानों पर बहुत जुल्म होते थे । उन्हें कोड़ो से पीटकर कर वसूल किया जाता था । नहीं देने पर कड़ी धूप में मुर्गा बनाकर खड़ा कर दिया जाता है । इतने सब अत्याचार को देखकर नीरू को बहुत गुस्सा आता है । लेकिन वह अपनी गरीबी को देखकर सब सहना पड़ता है । यहां पर इतना श्रम करने पर उसे दो महीने में दस रुपये मिलते है । इतनी कम पगार पर नौकरी करना उसे पसन्द नहीं आया । लेकिन घर की हालात देखकर फिर स्वीकार कर लेता है । उसे फिर मुंशी सारा हिसाब-किताब समझा देते है । अच्छी तरह कर वसूलने पर ऊपर से अच्छी आमदनी भी हो सकती है । अतः यहां पर ही रहकर नीरू जिंदगी का अनुभव भी प्राप्त करता है । राय साहब किस कड़ाई से किसानो से उसका खून चूस-चूस कर कर वसूलते है तथा इन्सपेक्टर को खुश करने पर उसे रुपया देते है । जितना

ज्यादा रूपया कहीं दिया जाता है । उतना गरीबो पर जोर देकर उनसे वसूला जाता । हार कर नीरू ने भी किसानों से कर लेना शुरू किया । लेकिन वह किसानो से रियायत भी करता था । कभी कभी उनका लगान माफ भी कर देता था । उसके मन में बहुत ही दया भावना थी । क्योंकि उसने स्वयं गरीबी में दिन काटे थे । लेकिन उसकी नौकरी ही इसी प्रकार की थी । अतः उसे सब झेलना पड़ता है ।

इसके साथ यह भी बताया गया है कि बाभन कुछ भी कर सकता है । लेकिन छोटी जाति का कोई कुछ करे तो उसे सभी मारने को दौड़ते है । धिरेन्दर बाभन का लड़का है इसलिये उसका यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह चमाइनो को गाली दे, मारे, उनका जैसा चाहे उपयोग करें, किन्तु चमार की छोकरी उसे गालियां दे, ताव दिखाये, यह सब कैसे बर्दाश्त कर सकता है । वह लाठियां उठाकर लड़ पड़ते है । एक दो को देखकर सभी झगड़े को रोकने के बजाय उसे सामुहिक रूप दे देते है । लाठियों - लाठियों में शामधारी को सिर में लाठी लगाती है । गांव में कोई अस्पताल भी नहीं था । जिससे उसका जल्दी से उपचार किया जाता । शहर तक पहुंचते -पहुंचते वह रास्ते में ही मर जाता है । गरीब व्यक्ति मर भी जाये तो उसकी कोई सुनवाई भी नहीं करता है । मुखिया दरोगा को रूपये देकर केस को रफा-दफा कर देता है । शामधारी की नव विवाहिता पत्नी गुलाबी खेतों की देखभाल करने लगी । कुछ दिनों बाद शामधारी की मां के मरने पर वह अकेली असहाय हो जाती है । सुन्दर व जवान औरत को अकेला पाकर लोग उसकी सहायता करने के बजाय उसको बर्बाद करने का मौका ढूढ़ते है । शामधारी का भतीजा टीसुब चाहे तो अपनी चाची की सहायता कर सकता था । लेकिन खेतो की लालच में मुखिया ने उसे भी अपनी तरफ मिला दिया । वह भी बुरी नीयत से चाची की ओर देखता था ।

बैजू गांव वालों को भोज देने के कुछ दिनो तक बिंदिया से अलग रहा फिर तो बिंदिया बैजू के घर में ही आकर बैठ गयी । उसने अपनी बहिन गेंदा शादी एक बूढे व्यक्ति से कर दी जो एक महीने में मर गया । गेंदा वापिस मायके आ गयी ।

बैजू को अपनी बहिन की दूसरी शादी करवा देना चाहिये था। लेकिन वह ऐसा न करता अपनी बहिन की खुला अंदाज भी पसंद नहीं करता था। वह कहीं भी इधर-उधर घूमती तो लोग अपशगुन मानते थे। विधवा के लिये हंसना, खेलना, बात करना, घूमना सब मना है। उसे केवल पूजा-पाठ में ही ध्यान लगाना चाहिये। उसकी चटक-मटक, सजावट और उसका मोटा होना कुलच्छन है। पति नहीं है तो विधवा जी कर क्या करेगी। उसे मर ही जाना चाहिये। पता नहीं जिंदा रहने पर कब उसके पांव ऊंचे नीचे पड़ जाये। गेंदा अपने पति की याद में जल-जल कर सती हो रही है। लेकिन बाद में उसका देवर आकर उसे ले जाता है। गांव में सब जगह प्लेग व गिल्टी की बीमारी आती है। लोग घर छोड़ कर भागते है। इतनी बीमारी होने पर डॉक्टर की व्यवस्था नहीं है। इस गांव में बाढ़ आती है, महामारी आति है। भूख आति है, मालगुजारी वसूलने कुर्क अमीन, घूस लेने के लिये थानेदार आते है। लेकिन उपचार के लिये कोई नहीं आता है। बैजू को गिल्दी निकलने पर बिंदिया उसकी दिन - रात सेवा करने स्वयं को होम कर देती है।

नीरू भी धीरे-धीरे अच्छी आमदनी करके अपने सारे कर्जे उतरवा देता है। खेत छुड़वता है तथा नया मकान बनवाता है। अपनी बहिन की शादी करता है। तथा अपने भाई केशव को विश्व विद्यालय में पढ़ने के लिये भेज कर स्वयं अपनी आत्म तुष्टि करता है। संध्या की शादी भी दूसरी जगह एक इन्सपेक्टर के साथ होती है। हार कर नीरू को शादी करनी पड़ती है। परन्तु वह किस्मत से उसको साथ देने के बजाय भाइयों में फूट डलवाने वाली मोटी बदसूरत बीबी मिलती है। सब कुछ उसकी इच्छाओं के विरूद्ध होता चलता है। लेकिन वह सब सहन करता चलता है।

मुखिया का बेटा महेश पढ़ाई में फेल होता गया। तथा काम-काज करने के बजाय आवारा बन गया। लेकिन संयोग से उसको सुन्दर पत्नी प्राप्त हुई। जिसको भी वह मारता-पिटता था, घर छोड़ भाग जाता है। एक बार एक संन्यासी की जान बचाने के बदले में उसे सुविधा विभाग में नौकरी मिलती है। नौकरी मिलते ही वह नीरू से बदला लेने के लिये मन ही मन कुढ़ता रहता था। तथा मुखिया भी नीरू को सुखी सम्पत देख नहीं सकता था। अतः नीरू को क्रांतिकारी घोषित करके उसके खिलाफ लम्बी चौड़ी झूठी रिपोर्ट तैयार करता है।

लेकिन जब असलियत सामने आने पर उसको नौकरी से हाथ धोना पड़ता है। फिर मुखिया गजेन्द्र बाबु को नीरू के खिलाफ भड़का कर महेश को वहाँ नौकरी लेकर देते है। लेकिन वहां से भी अंत में नौकरी से निकाल कर जेल में जाना पड़ता है।

शामधारी की पत्नी गुलाबी अकेली होने पर जब किसी से सहायता मांगती तो लोग उसे सहायता देने के बजाय उसे ललचाई नज़रों से देखते थे। टीसुन भी उसको मारता-पीटता। उसको मारता देखकर गांव का कोई भी व्यक्ति उसका बीच-बचाव नहीं करता है। तभी बैजू उसे सहारा देता है। बैजू गांव वालों की परवाह न करके उसके साथ मिलकर उसके खेत भी संभालता है। तथा लड़का होने पर गांव वालों को दावत देता है। तो सभी उसका विरोध करते है। टीसुन व मुखिया इस बात का पापी व अन्यायी बताते है। तब नीरू इस बात का विरोध करता है। जब वह अधर्म के कार्य करता था तब तो मुखिया उसे गंगा नहाने, गांव भर को भोज देने से पाप नष्ट हो जाने के लिये कहता था। अब जबकि उसने भटकती हुई अबला को सहारा दिया है तो उसे अन्यायी कहते है। उसने तो उसका हाथ पकड़ कर सबकी बुरी नज़रों से उसे बचा कर सहारा देकर नेक काम किया है।

गांव में सभी एक दूसरे के दुश्मन बन बैठते है। सभी एक दूसरे के खेत उखड़ते है। खलिहान फूंकते है। तथा आन्दोलन भी जोर-शोर से चलते है। अंत में संघर्ष के बाद स्वराज्य की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार सच्चे व ईमानदार नीरू का स्वप्न साकार होता है। उसका भाई भी पढ़ लिख जाता है। आजादी प्राप्त होते ही लोगों को मुखिया जैसे नीच व्यक्ति के शोषन से छुटकारा मिलता है।

जल टूटता हुआ

समीक्षक मिश्र का दूसरा उपन्यास "जल टूटता हुआ" 1969 में हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी से हुआ । तथा द्वितीय संस्करण नेशनल प0 हा0 दिल्ली से 1978 में हुआ ।

यह उप0 भी पानी के प्राचीर उप0 की तरह है । उसमें आजादी के पहले का स्वप्न था । तो जल टूटता हुआ उप0 में स्वाधीनता के बाद लोगो में जो आशाएं व विश्वास मौजूद थे । वह पूर्ण रूप से स्वप्न पूरा नहीं हो पाता है । आजादी प्राप्त होने के बाद कुछ वर्ग ऐसे है । जो अपने ढंग से शासन को चलाना चाहते है । गांवों में भी राजनीति इस कदर पर छायी हुई है । जिसकी वजह से सरकार के प्रयत्न स्वरूप भी गांवों की स्थिति सुधरने के बजाय व्यवस्थित रूप से बिखरती चली गयी है । सब जगह भ्रष्टाचार, अनाचार, बेईमानी, घूसखोरी और मानवीय सम्बन्धों में गिरावट तथा कर्तव्यहीनता फैलती ही जा रही है । भारतीय जीवन में एक हास व गिरावट आ जाती है । यद्यपि उप0 में यथार्थोन्मुख आदर्श है । गांधीवाद और समाज वाद के आधार पर आधारित आज के आधुनिक समस्याओ पर यह उप0 आधरित है ।

उप0 का मुख्य पात्र सतीश गांव में फैली हुई अराजकता बाढ़ से खेती व गांव का विनाश, भुखमरी, तथा बढ़ती हुई राजनीतिकता से चिंतित रहता है । लेकिन वह अपने मन में एक आशा की किरण रखकर गांव में सुधार लाने, सब को सामुहिक रूप से न्याय देने, गांव में शांति व व्यवस्था कायम करना, गांव में स्कूल आदि का प्रबन्ध करना, जिससे गांव के बच्चे स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर सके । गांव में अस्पताल खुलवाने की व्यवस्था करवाने में (ताकि गांवों के ऊबड़ खाबड़ रास्ते से जाते हुए किसी व्यक्ति का जीवन नष्ट न हो जाये ।) भरसक प्रयत्न करने की कोशिश करता है । वह स्वंय अकेला रहकर गांव में सबको संगठित करने की कोशिश करता है ।

सतीश पहले तो महीपसिंह जैसे जमींदार के यहां लगन वसूलने का कार्य करता था । लेकिन आजादी के बाद जमींदारी खत्म होने के बाद महीपसिंह जैसे क्रूर व जालिम लोग जो अभी तक अपनी झूठी शान को लेकर जीते है । जबकि उनके

पास कुछ नहीं है । फिर भी वे सिपाहियो व कारिन्दों को रखे हुए है । उनको आधा भोजन भी नहीं मिलता था तथा कई कई महीनो से तनख्वाह भी नहीं मिलती थी । लेकिन वे लोग फिर भी डर के मारे उनके पास रहे हुए है । एक बार जगपतिया उसका विरोध करता है । उसकी गुलामी की नोकरी छोड़ कर कलकत्ता चला जाता है । वहाँ पर वह अपने दल को संगठित करके महीपसिंह के खिलाफ टक्कर लेता है । तथा उससे डट कर मुकाबला करता है । बाकी सिपाहियों को उसने कुछ बीघे दो बीघे खेत दे रखे थे । वे खेत छीन जाने के डर से उनकी गुलामी न चाहते हुए भी करते थे । महीपसिंह के यहां जो भी सम्मानित होकर आता था, जाता था अपमानित होकर ।

सतीश भी महीपसिंह द्वारा किसानों व सिपाहियों पर होने वाले अत्याचारों को देखता तो तड़प कर रह जाता है । लेकिन वह कुछ नहीं कर सकता था । वह स्वयं ही बेमन से वहां जाता था क्योंकि वहां पर अब कोई कामकाज नहीं था लेकिन वह अपने भाई की पढ़ाई के लिये रूका हुआ था । सारे किसान भी उसे बहुत चाहते थे ।

लेकिन जब गांव में सरपंच का चुनाव होता है । तो सतीश महीपसिंह की नौकरी छोड़ देता है । इससे महीपसिंह उससे दुश्मनी करके हर समय उसको गिराने की कोशिश करता है । इसके अलावा दीनदयाल मुखिया जो स्वयं गांव में अपना शोषण का राज्य चलाना चाहते थे । वे अपने कुछ लोगों के साथ मिलकर सतीश का खेत कटवाने की कोशिश करते है । सोशलिस्ट नेता राजकुमार वह भी सतीश के आदर्शों को देखकर जलता था । तथा राजनीति तरीके से गांव को चलाना चाहता था । वे सब मिलकर सतीश के खिलाफ थे । लेकिन गांव के अन्य लोगों का समर्थन सतीश के पक्ष में था क्योंकि वे न्याय व सच्चाई के पक्ष को मानते थे । सबके साथ समान न्याय करते थे । तथा वे गांव में सुधार लाना चाहते थे । इसके लिये जनता के समर्थन के साथ सतीश चुनाव में जीत जाते है । उनके जीतने के बाद भी महीपसिंह उनको दिये हुए उनके खेत वापिस लेता है । जिसके लिये सतीश महीपसिंह जैसे क्रूर जमींदार का गर्व तोड़ने के लिये उसे अदालत में बुलवाता है । परन्तु वह टूटा हुआ शेर अदालत में जाना अपनी बेइज्जती समझ कर जाने से इन्कार

करता है । अंत में उसको मजबूरन वहां पेश होना पड़ता है । तथा जगपतिया जैसे लोगों से हारना पड़ता है ।

सरपंच बनने के बाद सतीश गांव के छोटे-मोटे झगड़ो का निपटारा करने लगे । तथा जनता को भी उनके न्याय से संतोष प्राप्त होता था ।

लेकिन गांव में राजनीति इस कदर छायी हुई थी । उसके आगे सत्य व न्याय का मूल्य टूट रहा था । लोग अपने स्वार्थ के बल पर घूस देकर दूसरों के खेतो को अपने नाम लिखवा रहे थे । चकबन्दी करा रहे थे । लेकिन सतीश दोनो पक्षों के आगे ऐसे ऐसे तर्क पेश करके अपराधी को सजा दिला ही देता । गांव में जो स्कूल थे । उनके मास्टरों को कई-कई महीनों से तनख्वाह न मिलने के कारण स्कूल बंद होने लगे । गांव में गुंडई का ज्यादा बोलबाला छाने लगा सभी लोग अपना अपना स्वार्थ को लेकर खड़े थे । राजनीति देश की ओर से हटकर स्थानीय समस्याओं की ओर आने लगी थी ।

दीनदयाल जैसे मुखिया लोगों को तुड़वाने तथा अपने साथ मिलाने का कार्य करता है । उसने दो भाई बंका में रुपया कमा कर भेजते थे । जिसको यह जमाकर अपनी आर्थिक शक्ति की समृद्धि करता था । वह स्वभाव से ही धूर्त तथा व्याभिचारी था । स्वयं चाहे कैसा भी विलासी जीवन व्यतीत करे लेकिन लोगो को बदनाम करते थे देर नहीं करता था। गरीब जनता से धन बटोर कर दरोगा व इन्सपेक्टर की जेब गर्म करके अन्याय को बढ़ावा देता था । लोगों के खेत फूंकवाने के लिये उकसाता रहता था । तथा गांव की शांति को भंग किये हुए था ।

राजकुमार सोशलिस्ट नेता पहले तो सतीश के साथ मिलकर गांव को बदलने की सोचते है । लेकिन फिर राजनीति के दांव पेंच में पड़ कर हरबात राजनीति तरीके से केवल स्वार्थ के बल पर ही करते है । भले ही उसमें दूसरों का नुकशान हो । पहले तो ये भी महीपसिंह, दीनदयाल जैसे लोगों के साथ मिलकर सतीश को गिराने की कोशिश करते है । लेकिन अंत में आपसी दुश्मनी के कारण सबसे अलग सतीश का साथ देने को तैयार होते है ।

इसके साथ उप0 में बदमी हरिजन और कुंजू ब्रामन का प्रेम भी दिखाया गया है.. बदमी सभी पुरुष की प्रेम वासना से भटकती हुई प्रसन्न प्रेम को पाने के लिये कुंजू का

हाथ पकड़ती है। सभी दुखो का सताया हुआ कुंजू भाई का बिछोड से टूटा दीनदयाल के जुल्मो से दुखी, निकम्मा व आवारा कहलाने वाला सबके सामने जाति-पांति के बंधन को तोड़ कर पवित्र प्रेम को स्वीकार करता है।

इसके साथ ही दीनदयाल की बेटी शारदा का मास्टर तिवारी के साथ भी प्रेम सम्बन्ध दिखाया गया है। मास्टर तिवारी जैसे पढ़े लिखे योग्य व आदर्श व्यक्ति को भी नौकरी के लिये भटकना पड़ता है। अंत में उसे कालेज की नौकरी के साथ शारदा का प्रेम प्राप्त होता है।

उप0 में दहेज की समस्या को भी बताया गया है। पढ़े लिखे युवक भी बिना दहेज विवाह कबुल नहीं करते है। लड़का जितना पढ़ा लिखा होगा भाव उतना ही तेज होगा। सुग्गन तिवारी की बेटी गीता के लिये पढ़ा लिखा लेकिन बेरोजगार लड़का तो मिलता है। लेकिन दहेज कम के कारण सास के जुल्मो का शिकार होने के कारण उसके जीवन का ही अंत हो जाता है। मास्टर सुग्गन तिवारी 15 अगस्त के दिन भी झंडा फहराते हुए भी सोचते है, आजादी के मिले काफी वर्षो के बाद भी गरीबी उसी तरह व्यापी हुई है। उनको कई कई महीने तो तनखवाह नहीं मिलती खेतों में फसल का कोई भरोषा ही नहीं रहता। लोग कर्जे लेकर, अपने गहने बेचकर भी खाद, बीज खरीद कर इस आशा से खेत जोतते है। लेकिन बाढ़ की एक चपटे उनकी सब आशा फिरा देती है। लोग उपवास पर उपवास करते है। बाढ़ के कारण मकानों में सीलन भरी पड़ी हुई है। जिसके कारण सांपों के निकलने का भी डर रहता है। सांपों के काटने के बाद दूर दूर तक वैध या कोई उपचार नहीं हो पाता है। क्योंकि बाढ़ के कारण सब जगह जल <u>ह</u>लाजल ही विनाश का रूप धारण किये रहता है। बांध बनाये जाते है। लेकिन फिर टूट जाते है।

ऐसे समय का मौका पाकर चौधरी, मुखिया जैसे लोग केवल स्वार्थ के कारण अपने पेट भरते जा रहे है।

पहले के समान आज भी लड़का व लड़की में भेदभाव माना जाता है। लड़का होने पर खुशियां मनायी जाती है। तथा लड़की होने पर मातम। लड़की होने पर मां को कोसा जाता है। जैसे उसके हाथ में हो। लड़के को घी, मिठाईयां, खीर

खाने को मिलता है । और लड़कियां बेचारी देखती ही रहती है । उनका जीवन तो बचपन से लेकर ससुराल तक नरक का जीवन जीना पड़ता है ।

गांव में अब भी अंध विश्वास, भूत पूजा, अकर्मण्य पुन्य याचना करते है । आजादी के बाद भी शिक्षा का ठीक से विकास नहीं हो पाया है । जो अनपढ़ गंवार है, वे भूत पूजते है । जो पढ़े-लिखे लोग है जिन्हें अपने शिक्षित होने का गर्व है, वे पैसा पूजते है, स्वार्थ का भूत पूजते है, बेटे बेचते है, घूस लेते है, चोर बाजारी करते है । देश के निर्माण के नाम पर विनाश की पटरियां बिछाते है ।

गांवों में अस्पताल व दवाईयों की भी व्यवस्था नहीं है । यदि कोई दुर्घटना होती है, कोई आकस्मिक बीमारी होती है, कोई गम्भीर रोग होता है तो उनको शहर ले जाने के लिये मीलो तक सड़के नहीं, सवारियां नहीं है । जगह जगह गन्दे नाले, खाइयां, नदियां, बाढ़ की चपेट में सबको रास्ते में ही निगल जाती है । जो वैद्य या सरकारी दवाखाना है । वे भी मामुली दवाएं देकर केवल पैसा बटोरते है ।

गांव में जो व्यक्ति कुछ पढ़ लिखकर शिक्षित हो जाते है । तो उनके लिये बेरोजगारी की समस्या है । गांव के स्कूल में तो मास्टरो की तनख्वाह की व्यवस्था भी नहीं हो पाती है । नौकरी भी योग्य व काबिल व्यक्ति को न देकर अपने सम्बन्धी व रिश्वत लेकर ही मिलती है । गांव में सब जगह गुंडई व स्वार्थ का ही बोल-बाला रह गया था । जिनके पास पैसा है । वही जो चाहे जैसा चाहे कर-करा सकते है । जैसे गरीब जनता भेड़-बकरी हो । राजनीति में पराया कोई नहीं है और सभी पराये है,लोग दूसरो पर लाठी चलवा कर, उनको लड़वा कर अपना काम बनाना अधिक अच्छा समझते थे । जिससे गांव टूट रहे थे । मूल्य टूट रहे है । कोई किसी का नहीं, सभी अकेले है, एक दूसरे का तमाशा देखने वाले । न्याय-सत्य सभी झूठे हो गये है । केवल राजनीति कभी भी करवट बदल कर छुरा भोक कर मुस्कराती रहती है ।

गांव में बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र का दौरा लेते हुए भी एम0 एल0 ए0 तथा अन्य नेता केवल खड़े होकर गोल गोल भाषण देते, सरकार की मजबूरियां, झूठे आश्वासन तथा दुनिया भर की वाहियात बातें ही करते है । लेकिन गांव की समस्या का समाधान नहीं करते है ।

...49..

इन सब कारणों के कारण ही पढ़े लिखे लोग शहरों की ओर भागते है। शहरों की चमक दमक, सम्पन्नता, सुविधाएं तथा निर्माण कार्य को देख कर गांव को छोड़ना चाहते है। जहां पर केवल नीचता पूर्ण झगड़े टंटे, लूट-पाट, मार-पीट फूंका-तापी, चुगली निन्दारह रहा है। यहां पर न तो सार्वजनिक सुख है न अकेलेपन का। कोई सहायता तो नहीं करता बल्कि आलोचनाएं, गालियां, शिकायते, आक्रामक कारवाईयां टूट पड़ती है। गांव का उन्मुक्त वातावरण, उल्लास व प्रवृति का साहचार्य का सुख नहीं रह गया। हर समय तनाव लगा रहता है। कोई किसी पर हमला करता है। तो कोई किसी का कत्ल करता है। न्याय करने वाले सरपंच पर भी हमला होता है। सब तरफ खतरा ही खतरा नजर आता है। घूस देकर निर्दोष व्यक्ति को भी सजा हो जाती है। दोषी व्यक्ति पैसे के बल पर बच जाता है। लेकिन अंत में सत्य व न्याय का ही बोल बाला रहता है। आदर्श व न्याय के आगे सब को झुकना ही पड़ता है। सतीश का भाई चन्द्रशेखर गांव का कलक्टर बना कर भेजा जाता है। जो गांव को सुधार सकेगा।

इसके साथ ही सतीश के पिता अमरेश जी का वर्णन मिलता है। जो विदुषी, योग्य पंडित थे। लेकिन आलस्य व निकम्मे पन के कारण लोग उसकी विद्वता का तिरस्कार करते है।

कलसिंगार, गुर दयाल, डलवा, बलई, बिरजू, दौलत राय जैसे लोगों का भी वर्णन मिलता है। जो गांव में दंगा फसाद करते ही रहते है। परिवारों का टूटना, बाप का नालायक व निकम्मा पन लिये घूमना, गरीबो की बेइज्जती, दरिद्रता आदि दिखाया गया है।

HANSA MEHTA LIBRARY
The Maharaja Sayajirao University of Baroda

सूखता हुआ तालाब उपन्यास

राम दरश मिश्र जी का यह चौथा उपन्यास है । "सूखता हुआ तालाब" उप0 का प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली में 1972 को हुआ ।

यह उप0 भी "पानी के प्राचीर" तथा "जल टूटता हुआ" की तरह एक गांव की इर्द गिर्द चक्कर लगाती हुई उप0 की आंचलिकता को प्रस्तुत करता है । यह उप0 प्रतीकात्मक उप0 है । यह उपन्यास भ्रष्टराजनीति, स्वार्थी घेराबन्दी, पदलोभी प्रवृति, नैतिक व अनैतिक घटना मूल्यों से भरा हुआ है । गांव में सब जगह ऐसे तत्व भर गये है कि न तो गांव में रहते बनता है न ही छोड़ते बनता है ।

सुखे हुए तालाब को प्रतीक रूप में लिया गया है । कि अब तालाब सूख गये है । रामी तालाब जो धार्मिक कथाओ व अनुष्ठानों के प्रयोग में लाया जाता था । अब वही दुर्गन्ध पूर्ण कीचड़ से सना हुआ है । जिसके पास आने से दुर्गंध व सड़ाध अंदर आ ती है । इसी प्रकार कीचड़ के समान विषाक्त राजनीति के आ जाने से जीवन के मूल्य टूट गये है । अज्ञानता और अंधविश्वास फैलता जा रहा है । गांव में फैलती जा रही विवाद पूर्ण जीवन का चित्रण यहां पर किया गया है ।

इस उप0 का मुख्य पात्र देवप्रकाश जो सदाचार का जीवन पसन्द करता है । वह पहले शहर में नौकरी करता था। लेकिन फिर वह उस नौकरी को छोड़ कर गांव में स्वाभिमानी पूर्ण जीवन जीना पसन्द करता था । गांव मे सब जगह अनैतिकता तथा राजनीति फैलने के कारण वह उनमे शामिल न होने के कारण अपने आप ही अकेला अपनी ईमानदारी से जूझता रहता । फिर कभी सोचता क्या जिंदगी जीने के लिये यह सब कियाएं करनी कोई जरूरी तो नहीं है । देवप्रकाश का चाचा का लड़का अवतार (जो विधुर था लेकिन एक पासिन के साथ उसका सम्बन्ध था ।) को तो समाज के कुछ बड़े लोग कुछ नहीं कहते है । लेकिन जो उनकी बात न मान कर भले ही वह सही कार्य क्यों न हो करें तो उसका विरोध होगा । गलत कार्य छिप कर करना राजनीति का खेल माना जाता है । इसके लिये वे अवतार भाई को कुछ न कह कर विरोध करने वाले देवप्रकाश को समाज से बाहिस्कार करते है । उनके घर में होने वाले भोज पर समाज के अन्य बहिस्कृत लोगो के सिवा कोई नहीं जाता

है । यदि कोई उसके यहां भोज पर जायेगा तो उसको भी वे समाज से अलग कर देंगें ।

देव प्रकाश का बेटा रविन्द्र जो अपने पिता के विपरीत था । वह स्वयं दूसरे की बहिन की इज्जत से खिलवाड़ करके दूसरे की बेइज्जती करके उससे बदला लेना चाहता था । वह दूसरों की पोल खोल कर उनकी बेइज्जती करने में अपनी शान समझता था ।

शिवलाल, शामदेव और धर्मेन्द मास्टर यह गांव के मुखिया माने जाते है । ये लोग धर्म की आड़ में कुछ भी गलत कार्य करते रहे । तो इन्हें कोई कुछ नहीं बोलेगा बल्कि वह उसे राजनीति का कार्य कहेंगे । ये लोग राजनीति की आड़ में किसी की बहू बेटी की इज्जत से खिलवाड़ करें तो कोई घृणित कार्य नहीं है ।

शिवलाल जी हरिवंश पुराण की कथा का आयोजन शुद्ध आध्यात्मिक दृष्टि से नहीं करते अपितु खाली समय काटने एवं अपने पुत्र की सन्तान कामना से करते है । लेकिन उस कथा में कीर्तन के बदले फिल्मी गीत गाये जाते है । कीर्तन मंडली गाने वाले शामदेव व धर्मेन्द्र थे । जो कथा प्रारम्भ होने से पहले अपने गांव की गरीब चमार की बेटी चनइया की खेत में इज्जत लूटते है । फिर पवित्रता का ढोंग करके कीर्तन गाते है । लेकिन जब प्रसाद बांटते समय जब धर्मेन्द्र का हाथ हरिजन चनइया के भाई के साथ छू जाता है तो वह उसे खीचकर तमाचा मारता है. उसके छूने से सारा प्रसाद को अपवित्र मान कर हरिजनों में बंटवा दिया जाता है । हरिजनों की इज्जत आबरू लूटने में उन्हें अपवित्रता नहीं लगती है । लेकिन साथ में बैठकर खाने या छू जाने से पवित्रता नष्ट हो जाती है ।

यही शिवलाल दिन को तो घर में हरिवंश पुराण की कथा करवाते है । तथा रात में नींद नहीं आने के कारण हरिजन चनइया के यहां जाने के लिये सोचता है । क्योंकि उन्हें भी विधुर होने की वजह से अकेलापन रास नहीं आता हैं ।

सारा गांव ही भ्रष्ट होता जा रहा है । सभी बड़े बडे लोग किसी न किसी के साथ सम्बन्ध बनाये हुए है । शिवलाल, धर्मेन्द्र, दयाल ये सभी चनइया के साथ उससे खिलावाड़ करते है । उसकी मां रूपये-पैसे की लालच में उसे उसके प्रति

के यहां नहीं भेजती है। क्योंकि शिवलाल वगैरह उसकी मां को अनाज वगैरह देकर भट्ट कर देते है। चन्दया को सब कुछ पसन्द न होने पर भी उससे मजबूर सहन करना पड़ता है। लेकिन जब उसे गर्भ ठहरता है। तो उसे कोई अपनाने को तैयार नहीं रहता है। बल्कि उसको गिरवाने की बात कहकर उसकोजान से मारने की धमकी देते है। लेकिन चन्दया उच्च वर्ग की लड़कियों की तरह उसको गिरवा कर पाप छिपवना नहीं चाहती है। बल्कि वह तो बच्चे को जन्म देना चाहती है। लेकिन गांव के स्वार्थी व नीच लोगों की नीचता से तंग होकर वह गांव छोड़ने पर मजबूर हो जाती है।

रविन्द्र स्वंय धर्मेन्द्र की बहिन लीला के साथ गलत कार्य करता है। अपनी करनी पर पर्दा डालकर दूसरे गांव के रमहोने नामक लड़के को उकसा कर उसको लीला के साथ भगाने का षड्यन्त्र करता है। लीला को रमहोना के साथ प्रेम में फंसवा कर उससे उसके नाम चिट्ठियाँ लिखवाता है। ताकि चिट्ठियों के जरिये वह अपना काम भी करता रहे तथा धर्मेन्द्र को बदनाम भी कर सकें।

धर्मेन्द्र भी शिवलाल की बेटी कलावती के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करता है। चूंकि ये दोनो दोस्त थे तथा राजनीतिज्ञ भी थे। इसलिये शिवलाल, धर्मेन्द्र को कुछ न कह कर देव प्रकाश के साथ बदला लेने के लिये उसके बेटे रविन्द्र थे। उसके गर्भ का दाता बताते है। ताकि जाति से अलग करने के बाद वे लोग उसे गांव से भी अलग कर सके। क्योंकि देव प्रकाश शिवलाल की किसी भी बात का समर्थन करने के बजाय विरोध करता था। लेकिन देवप्रकाश का समर्थन दोस्त जैराम कलावती द्वारा लिखा हुआ कागज पेश करके उसको बदनामी से बचा लेता है।

इसके अलावा मोती लाल जैसे नेता भी अपने छोटे भाई की विधवा से कुकर्म करके रात ही रात में गर्भ गिरवा कर फेंक देते है। पकड़े जाने पर वे वासना को वैज्ञानिक आधार पर शरीर की आवश्यकता पूर्ति का माध्यम बताते है। जब उसकी पत्नी मायके में हो तब उनकी जरूरत पूरी करने का माध्यम तो चाहिये ही।

गांव के अंध विश्वासी लोग उसे भूत वगैरह समझ कर झाड़ फूंक करवाते है।

तथा ओझा वगैरह को बुलवा कर मंत्रों का उच्चारण करवाते है । गांव में एक ज्योतिष के आने पर सभी लोग एक दूसरे की पोल खोल कर एक दूसरे का भेद ज्योतिष को देते है । और ज्योतिष भी उनके सामने ऐसे ही मंत्रों का उच्चारण करके, देवी-देवताओं की मनौतियां मना कर गांव वालों को ठगते है ।

गांव में कुछ त्यौहार व उत्सव पर एक दूसरे को भोज देकर आपस में सब संगठित होते थे । मोती लाल के यहां लड़का होने पर उसके घर पर भोज आयोजन का लोग विरोध नहीं करते है । जबकि अवतार भाई का दूसरे के साथ सम्बन्ध होने पर देवप्रकाश का बायकोट कर दिया था । लेकिन मोतीलाल नेता होने के कारण वह अपनी भाभी के साथ कुकर्म करने पर पवित्र माना जाने लगा । लोगों के विचारानुसार उसकी भाभी दूसरों से सम्बन्ध स्थापित करके अपनी पूर्ति करे उससे अच्छा तो घर का घर में ही हो तो अच्छा है । इसके अलावा वह ओझा से पूजा-पाठ करवा कर भूत को बांध कर नदी में फिंकवा देता है । तो वह पवित्र हो गया ।

गांव में सरपंच का चुनाव का बहुत शोर गुल होता है । हर एक अपने को पवित्र व पापी साबित करना चाहता है । शिवलाल चाहता था कि वह सरपंच बनें । लेकिन गांव में केवल देवप्रकाश को छोड़ कर सभी गलत कार्यों में लगे हुए थे । तथा अपने आप को राजनीतिज्ञ मानते थे । लेकिन देवप्रकाश सब तरह से अकेला अपने आप को पाकर तथा गांव में कुछ भी सुधार की संभावना न देखकर सब जगह भ्रष्ट व नैतिकता को ध्यान में रखते हुए दूसरे गांव के शंकर को चुनाव में जीतवा कर स्वयं वह गांव छोड़कर शहर में नौकरी के लिये चले जाते है । जिस गांव के लिये वह नौकरी छोड़ कर आया था । उसी गांव को इतना गिरा हुआ देख कर, उस गांव में अपने आप को नितान्त अकेला मानकर छोड़ देता है । तथा अपने बेटे को भी उपदेश देता जाता है । तुझे जो बनना है तु बन जा, क्योंकि यह जीने के लिये जरूरी है । इस गांव में या तो नपुंसक जी सकते है या बदमाश । क्या अपने वैशिष्टय को खोकर भीड़ में खो जाना ही जीना है । यहां पर कोई भी मानवता और मूल्य नहीं रह गया है । केवल सुविधा परक समझोता ही रह गया है । पहले तो दो एक बदमाशियां होती थी अब तरह-तरह की होती है ।

दूसरा देव प्रकाश का एक मात्र साथी जैराम भी अपनी भाभी के दबाव में आकर अपने भाई के मृत्युभोज पर देव प्रकाश को निमंत्रित नहीं करते, क्योंकि वह बहिष्कृत है। यदि उसे निमंत्रित किया जाता है। तो गांव वाले जैराम के यहां भोज पर नहीं आते। देव प्रकाश इस घटना से भी टूट जाते है। वह अपने विचारों के आरोह-अवरोह में फंस कर भी अपने मूल्यवादी संस्कार को नहीं छोड़ सकते थे। अतः वह गांव को ही छोड़ना मंजूर करते है।

इस प्रकार "सूखता हुआ तालाब" प्रतीक रूप में गांव की टूटती हुई जिंदगी को लेकर चलता है। प्रतीकात्मकता इसकी अपनी एक उपलब्धि है।

अपने लोग उपन्यास

कथाकार राम दरश मिश्र जी का पांचवां उपन्यास " अपने लोग" का प्रकाशन 1976 को नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली से हुआ है । दूसरा बड़ा उपन्यास "द्वितीय संस्मरण " 1986 में दिल्ली से ने. प. हा. से हुआ है ।

यह उप0 भी गोरखपुर शहर से लिया गया है । लेखक चूंकि गांव की मिट्टी से अधिक जुड़े हुए थे । अतः उनके मूल में वह वहां के नदी, बाग, खेतों व प्रकृति से जुड़े होने के कारण उन्हें शहर की जिंदगी रास नहीं आती है । "अपने लोग"उप0 में अपने लोगों पर ही व्यंग्य किया गया है । जो कहने के लिये तो अपने है । लेकिन वे काफी घटिया, स्वार्थी और कुटिल है । ऊपर से तो ये लोग बहुत ही अपनापन जताते है । लेकिन भीतर से वे हमेशा मौके की खोज में रहते है । जो सम्बन्धी, चचेरे भाई है । वे भी केवल अपनापन जता कर मौके का फायदा उठाना चाहते है । यह इस उप0 के माध्यम से बताया गया है । इसके अलावा स्वार्थ का सबसे बड़ा रूप राजनीति है । इस राजनीतिक गन्दगी में सभी पार्टियाँ शामिल है । दिल्ली जैसे शहरो में तो राजनीति है ही । इधर भी सब जगह राजनीति व्यापी हुई है । उसका चित्रण यहां मिलता है ।

इस उप0 का एक पात्र प्रमोद जो दिल्ली में बीस वर्षीय नौकरी करने के बाद, उस सुख सुविधापूर्ण जिंदगी बिताने के बाद भी गोरखपुर शहर में रहना चाहते थे । क्योंकि उनका बचपन यहां पर बीता था । उनके राम-रोम में गांव की मिट्टी की महक बसी हुई थी । परन्तु गोरखपुर में आने के बाद उनको रोज-रोज अनेक समस्याओं को सहन करना । पड़ता है । जिस आत्मीयता को पाने के लिये वह यहां आना चाहता था, वही उसे बहुत ही स्वार्थी तथा कष्ट कर प्रतीत होते है ।

गोरखपुर से गांव नजदीक होने के कारण उसके चचेरे भाई रमेश व श्याम अपनी किसी न किसी समस्या को उसके आगे लाते है । रमेश अपनी पत्नी व बच्चे को प्रमोद के यहां इलाज के लिये भेज देता है । प्रमोद नौकरी पेशे वाला व्यक्ति होने

के बावजूद भी पहले तो उसके खर्चे वहन करता है। उसके लिये दवाई व फलों का इंतजाम करता है। लेकिन फिर वह आये दिन रुपये मांगने के लिये आ पहुंचते है। कभी बैल खरीदने के लिये पैसे, कभी गांव में मकान खरीदने के लिये पैसे, कभी मालगुजारी जमा करने के लिये पैसों की मांग करते है। जबकि गांव की आधा सम्पत्ति का हकदार वह भी है। फिर भी उसको कभी खेती से उत्पन्न चावल नहीं मिलते है। उनके पास पैसा होने के बाद भी वे प्रमोद से निकलवाना चाहते थे। दूसरा भाई श्याम जो स्कूल में मास्तरी करता था। वह भी अबेर-सबेर अपने परिवार को लेकर प्रमोद के यहां आ जाते थे। श्याम की उल्टी सीधी हरकतों के कारण जब उसकी नौकरी को खतरा लगता है। तो वह अपने परिवार को तो गांव में भेज देते हैं। स्वयं मुकदमे, वकील आदि का जिम्मा प्रमोद पर छोड़ देते है। स्वयं सिनेमा देखने निकल पड़ते है। उनकी पत्नियां भी सारा दिन पांव पसार कर बैठी रहती है। प्रमोद की पत्नी संज्ञा ही अकेली सारा काम-काज संभालती। इन सबके आ जाने से तथा प्रमोद को अपने परिवार की सेवा करने से ही पूर्ति ही नहीं मिलती थी। कि वह शांति से अपना कुछ पढ़ व लिख सके। आखिर तंग आकर वह अपने चचेरे भाईयों को कह देता है। मुझसे रोज के खर्चे बर्दाश्त नहीं होते है। वह भी नौकरी पैसे वाला आदमी है। इतने बड़े शहर में उसका भी अपना परिवार व उनके खर्चे वगैरह भी संभालने होते है। अंत में वह अपने भाईयों के स्वार्थ को समझ, उनसे गांव की जायदाद के बंटवारे की बात करने के लिये आने के लिये कहता है।

इस उप0 का दूसरा पात्र बी0 लाल है। जिसका एक सौतेला भाई के0 लाल बौद्धम है। उसकी मां कलावती जवान व सुन्दर होने के कारण अपने पति को अपने प्रति अयोग्य, वृद्ध समझकर दूसरे लोगों से सम्बन्ध बनाकर अपनी तृप्ति करती है। जो उसके पति कोअसहय होने के कारण वह आत्म हत्या कर लेते है। कलावती के गलत आचरण व बदनामी का असर उसके बेटे बी0 लाल पर पड़ने लगा। वह अपनी मां से नफरत करने के साथ-साथ स्वयं भी गलत रास्ते पर चलने लगा। वह शराब पीता व लड़कियों के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करता था। एक बार वह मंजरी नामक ईसाई लड़की को देखकर उससे शादी करने के लिये सोचता है।

मंजरी एक अस्पताल में नर्स थी । उसके पिता के मरने के बाद वह अपनी मां के साथ रहती थी । उसे नर्स की नौकरी के साथ-साथ जिंदगी में आने वाले मर्दों पर से विश्वास हट गया था कि वह ईसाई होने के कारण हिन्दू उससे शरीर का भोग कर सकते है लेकिन ब्याह नहीं । इसके लिये पहले तो वह भी बी0लाल को आवारा समझती थी । लेकिन वह पैसे वाला भी था । इसके लिये उसकी मां मंजरीके नाम बी0 लाल की आधी जायदाद व प्लेट व 4 बीघा जमीन करने की शर्त बी0 लाल के सामने रखकर फिर शादी का प्रस्ताव रखती है । ताकि उसको आश्वासन हो जाये यदि बी0 लाल शादी के बाद भी गलत आचरण करता रहे या मंजरी को छोड़ दे तो मंजरी को जीवन निर्वाह करने के लिये मुश्किल नहीं पडेगी । बी0 लाल ब्राहमण होने के बावजूद भी उसकी मां के बद्चलन, बदनामी के कारण कोई उससे शादी करने को तैयार न था । इसलिये वह मंजरी के ईसाई होने पर भी उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है । इसके लिये वह अपने भाई के0 लाल को नशा कराके उससे हस्ताक्षर कराके धोखे से उसकी जायदाद मंजरी के नाम करा देता है । लेकिन उसकी मां कलावती को पता चलने पर वह बी0 लाल पर मुकदमा करवाती है । तथा मंजरी की मां भी बी0 लाल अपनी जायदाद को अलग कराने के बजाय अपने भाई को धोखे से जायदाद नाम कराने के कारण शादी का प्रोग्राम रद्द कर देती है । मंजरी भी अपनी मां के कहने के अनुसार दूसरी जगह डा0 सूर्य के यहां नौकरी करती है । बी0 लाल की मां अपनी होने के कारण भाई भी अपना होने पर भी उसको वहां अपनापनत्व नहीं मिलता है । तभी वह इस तरह भटक कर आवारा बनता है । इसी उपेक्षा के कारण उसकी शादी भी रुक जाती है । मंजरी को डा0 सूर्य के यहां देखकर बी0 लाल उनके गलत सम्बन्धों का विचार कर शादी करने का विचार ही निकाल कर फिर से भटकने लगता है ।

बड़े नामी व्यक्ति जैसे डा0 सूर्यकुमार जैसे लोगों का सम्मान होता है । भले ही वह अंदर ही अंदर गलत कार्य करते हो । वे लोगों की झूठी गवाही देकर उनको नौकरी से बरखास्त करते है । गरीब व्यक्ति को शराब की लालच दे-देकर फुलवा की सारी जायदाद अपने नाम करवा देता है । इतना पैसा होने के बावजूद भी वह गरीब व्यक्तियों की ओर निहारता नहीं था, उनसे कोई पैसे में रियात

भी नहीं करता था । यहां तक कि घर में रंडी बाजार लगा रहता था । तथा अपनी पत्नी की ओर देखता भी नहीं था । उसको हर समय मारता व पिटता था । समाज में ऐसे लोगों की इज्जत होती है । तथा वह राजनीतिक होने के कारण तरह-तरह के हथकंडों को अपनाते थे । बड़े बड़े नेता व मंत्री भी उनके ही इशारों पर चलते थे ।

सब जगह राजीनीति इस कदर हावी हो रही है । कालेज में भी राजनीतिक स्वार्थ सिद्ध करने के लिये पार्टी के लोग एक दल से दूसरे दल को बदनाम करते है । तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये शिक्षा में भी राजनीति का प्रयोग करते है । कालेज में मार-पीट, तोड़-फोड़, दंगे होना सब इस कुटनीतिक राजनीति का ही परिणाम है । जिसका असर शिक्षा पर भी पड़ता है । राजनीति में पेशा और पेशे में राजनीति तो दिल्ली जैसे शहरों में थी । लेकिन अब तो उसका असर गांव व कस्बो में भी देखने को मिलता है । यहीं पेशेगत अपना प्रभाव राजनीतिक चुनाव में लाभ उठाकर राजनीति व पेशे के बीच सुरंग बनाकर आया जाता करते है ।

शहरी लोग समझते है कि वे पढ़े-लिखे वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर और अफसर है तो किसी दूसरो के सम्बन्धी में दखल देना अपना अधिकार समझते है । लेकिन ये लोग केवल देखने में आधुनिक लगते है । इनके कार्य तो गांव वालों की अपेक्षा अधिक संकीर्ण और असभ्य होते है ।

इतने बड़े डॉक्टर सूर्य व वह उस शराबी व्यक्ति में क्या फर्क है । जो अपनी पत्नी फुलवा को नशे में मारता है तथा दूसरी पत्नी रख के बैठा है । दोनों ही गलत आचरण करते है तथा अपनी पत्नियों को पीटते है । लेकिन सूर्य कुमार नामी, प्रतिष्ठा होने के कारण ढका हुआ है ।

उमेश जैसे प्रतिभाशाली व योग्य व्यक्ति को एम ए फर्स्ट क्लास आने पर लेक्चर शीप की नौकरी नहीं मिलती है । वह क्लर्क की नौकरी करता था । उससे निम्न योग्यता वाले व्यक्ति को सिफारिश से लेक्चर शीप मिल जाती है । साथ ही उससे प्रेम करने वाली माधुरी भी योग्यता को नहीं बल्कि एक ओहदे को पाना चाहती है । वैभव के आगे योग्यता का कोई मूल्य नहीं है । जिसकी वजह से एक

प्रतिभाशाली व्यक्ति पागल होकर जिंदगी भर के लिये भटकता रह जाता है। तथा दर-दर की ठोकरे खाता है। क्या शिक्षा और प्रतिभा हासिल करने से यही कुछ प्राप्त होता है। तो ऐसी शिक्षा किस काम की जिससे न तो कोई नौकरी ही मिल सके, न ही अपनी प्रतिभा को विकसित कर सकें।

नैतिकता और मूल्य की कोई कीमत नहीं रह गयी है। जो व्यक्ति नैतिकता और मूल्य को लेकर बैठता है। ऐसे व्यक्तियों को नौकरी से बरखास्त किया जाता है। जो चमचागिरी व चापलूसी करे, उसी को तरीकी व मान मिलता है। जो चुपचाप जी हजूरी करके काम करे, उसे अपमानित किया जाता है। राम विलास जैसे शिक्षित व योग्य व्यक्ति को नौकरी से निकाला जाता है। अगर कोई नौकरी करने के लिये मुश्किल से परेशानी उठाकर पढ़ता भी है तो उसे उसकी योग्यता के आधार पर नौकरी नहीं मिलती है। रिश्वत के आधार पर या जान-पहचान के आधार पर बिना डिग्री के भी नौकरी जल्दी मिल जाती है।

आज दुनिया बहुत तेजीसे बढ़ रही है। उसके साथ ही साथ मंहगाई भी बहुत जोर शोर से बढ़ रही है। जिसमें मध्यम वर्ग व निम्न वर्ग पिछड़ते जा रहे हैं। वे इस दोड़ का मुकाबला नहीं कर सकते है। इसके साथ बेकारी भी बढ़ती जा रही है। जो लोग ईमानदार व सभ्य है। वे पीछे रह जाते है। जो पैसे वाले व चापूलस है व जरूर थोड़ा आगे निकल जाते है। ऐसे समय का पूरा फायदा नेता-वर्ग व व्यापारी वर्ग उठाते है। जो पूरी तरह से केवल धन को बटोरने में लगे है।

जो व्यक्ति केवल रोटी के टुकड़े के लिये चोरी करता है। उसे तो पुलिस पकड़ती है। और जो पुलिस के सामने ही 200 रूपये का पाकेट मार जाता है। उसे पुलिस कुछ नहीं कर सकती।

इसके अलावा मंगलसिंह जमींदार, शिवनाथ नेता, बलरामसिंह, रामजन्म दुबे जैसे पेशेवर लोग व नेता है। जो किसी न किसी तरीके अपने पेशे के जरिये लोगों से पैसा बटोरते है तथा समाज में सम्मान प्राप्त करते है।

पवन जैसे कुछ आशावादी नौजवान भी बताये गये है। पवन प्रोफेसर प्रमोद का बेटा है। उसका पढ़ाई-लिखाई में बिलकुल मन नहीं लगता है। क्योंकि वह जानता है कि उसके पिता जी प्रोफेसर बन जाने के बाद भी कितना रूपया इकट्ठा कर सके है।

जो वह पढ़ कर कर लेना । इससे अच्छे तो रामजन्म दुबे जैसे अनपढ़ लोग है । जो कम से कम अपना मकान तो बनवा सके है । वह अन्याय के खिलाफ विरोध करता है । जबकि प्रमोद समझता है कि पढ़ाई से उसको नौकरी नहीं मिलेगी । लेकिन प्रतिभा का विकास तो सम्भव है । वह उसे मार्क्सवाद बनने के लिये कहता है । जिन बातो का वह खुलकर विरोध नहीं कर सकता था । वह अपने लड़के द्वारा करने पर उसे प्रोत्साहित करता है । वह असली समाजवाद लाना चाहते है । जहां पर सभी को समान नजर से देखा जाये, चुनाव होते है । सभी अपने अपने दलों का प्रचार करते है । डा० सूर्य अपना चुनाव का प्रचार के लिये कवि-सम्मेलन कराते है । ताकि लोग साहित्यक दृष्टि से इसमें भाग ले सके । लेकिन यह सब भी दिखाने के लिये मंत्री को बुलाया जाता है । इस सम्मेलन में उमेश के आने से सूर्य कुमार उस कवि की मंच पर पिटाई करके अपमानित भी करता है । क्योंकि उमेश सबके सामने सच्चाई को पेश करता है । उनका विरोध करता है । ऐसे लोगों की उपेक्षा की जाती है । उन्हें अपमानित किया जाता है ।

इस प्रकार इस उप० में अपने ही लोगों द्वारा पीड़ित स्थिति दिखायी गयी है । प्रमोद को चोट लगने पर जो लोग उनसे सहानुभूति दिखाने के लिये पुछने आते थे । वे भी कुछ न कुछ पैसे मांगने आते या भोजन आदि के समय ही आते थे । सब कोई अपने अपने स्वार्थ को ही देखते है । दूसरों से हमदर्दी, सहानुभूति, लगाव, प्रेम, मानवता जैसी चीज ही नहीं है । जो थोड़ी बहुत सहानुभूति है वह भी अपने राजनीति स्वार्थ के कारण है । हर चीज राजनीति व्यापक है । इस प्रकार मिश्रा जी ने समाज पर व अपनत्व की भावना पर तीखा व्यंग्य करके इस उप० को प्रस्तुत किया है ।

आकाश की छत उपन्यास

रामदरश मिश्र द्वारा लिखित "आकाश की छत" नामक उपन्यास 1979 में वाणी प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित हुआ ।

"पानी के प्राचीर" और "जल टूटता हुआ" के बाद रामदरश मिश्र ने "आकाश की छत" उप0 में बाढ़ का सजीव चित्रण किया है । "पानी के प्राचीर" और जल टूटता हुआ उप0 में तो केवल बाढ़ का उल्लेख मात्र ही किया है कि गांव में बाढ़ के आने पर सब सब कुछ तहस-नहस हो जाता है । गरीब और गरीब होते जाते है । लेकिन "आकाश की छत" उप0 में दिल्ली जैसे महानगर में बाढ़ के आने से उससे होने वाले विनाश का नहीं, अपितु सरकारी लोगों द्वारा प्राप्त सहायता का वर्णन किया गया है । यहां पर विनाश लीला का वर्णन फैशन के रूप में किया गया है ।

इस उप0 में शहर में रहकर वर्तमान रूप में रहकर भी गांव की ओर, उसके अतीत का चित्रण को प्रस्तुत किया है । क्योंकि शहर में रहने के बाद भी मिश्र जी स्वभावत: गांव की प्रकृति से जुड़े हुए है । बिना गांव का जिक्र किये मानों उनका उप0 पूर्णत: नहीं प्राप्त कर सकता है ।

इस उप0 का आरम्भ में ही दिल्ली के माडल टाउन पर यमुना नदी का वेग बढ़ जाने के कारण बाढ़ आयी थी । इस बाढ़ से घिरा हुआ यश अपने किराये के मकान की छत पर बैठा हुआ बाढ़ द्वारा पीड़ित व्यक्तियों को प्राप्त सरकारी सहायता की व्यवस्था को देख रहा है । वह भूख-प्यास से व्याकुल होकर आने वाली नाव का इंतजार करता है । ताकि उसको भी कुछ सहायता प्राप्त हो सके । लेकिन नाव वाले कुछ गिने-चुने लोगों, पहचानने वालों की सहायता कर रहे थे । उसकी ओर किसी का भी ध्यान नहीं था । वह पानी से चारों तरफ से घिरा हुआ न तो किसी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सकता था । न ही उनसे कोई सहायता प्राप्त कर सकता था । बाढ़ का पानी सब तरफ होने के बावजूद भी यश एक बूंद पानी के लिये तरस रहा था । वह भूखा-प्यासा, अकेला बैठकर अपने अतीत की गहराइयों में खो जाता है । उसे इस बाढ़ को देखकर अपने गांव,

कस्बो, भाइयों व पिताजी, राधा तथा अन्य सभी बीती बातों की याद आ जाती है । और वह निढाल होकर उसी में खो जाता है ।

गांव में भी बाढ़ आती है । उसमें सारे खेत डूब जाते है । लोगों को फिर गरीबी की भयावह स्थिति का सामना करना पड़ता है । लोग अपने घरों से सोने-चांदी के सिक्के निकाल कर सेठ को देकर उससे मरे हुए मन से कुछ पैसे लेकर आते है । सेठ के वही खाते में एक बार जो चीज गयी, वह वापिस नहीं निकलती है । यश के खेत भी सेठ के बहीखाते में ही डूब जाते है ।

यश के पिता प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे और दस बीघे पुश्तैनी खेत थे । यश के दो सौतेले भाई राम और बदरी थे । जिनका पढ़ाई में मन नहीं लगने के कारण वह खेती-बारी को संभालते थे । उसके पिताजी ने उसे बहुत ही प्यार व दुलार से पाला-पोसा था । यश पढ़ने में बहुत तेज व होशियार था । राम का व्यवहार यश के प्रति अच्छा नहीं था । राम के गलत आचरण, निकम्मेपन व उलटी सीधी हरकतो के कारण उसकी पिताजी चिन्ता के कारण चल बसते है । लेकिन बदरी भैया यश को पिताजी की तरह स्नेह व दुलार देता था । वह पहलवान भी था वह यश की पढ़ाई के लिये सेठ के यहां नौकरी करता था ।

आजादी प्राप्त होने के बाद भी जो लोग अंग्रेजो के पिठ्ठू थे । वे अब किसानों का खून चूसने वाले बड़े-बड़े जमींदार व बड़े व्यापारी बन गये थे । सेठ भी उनमें से एक था । अब भी बड़े-बड़े ऑफीसर लोग उनके यहां आते है । ऐसे लोग गरीबो का खून चूस कर भी सरकार की तरफ से एम0 एल0 ए0 की टिकट प्राप्त कर लेते है ।

लेकिन इस सेठ का विरोध करने वाले लोगों का संगठित दल बल पा रहा था । इस दल को बल देने वाले कामरेड जगत व उनके साथ रूपमती थी । रूपमती किसी की चिन्ता किये बगैर जगत को पूरा साथ देती थी । कामरेड जगत किसानों, मजदूरों के दल अध्यापक, लेखक व नेता को संगठित करने थे ताकि वे सब मिलकर सेठ का या जुल्म करने वालों का विरोध कर सके । उनके यहां पर सब को समान समझा जाता था । किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता था । यश भी बिना जाति भेद भाव माने रूपमती के हाथों पानी भी पीता है ।

गांव में स्कूलों की समस्या भी है । मध्यम वर्ग या निम्न वर्ग के लोग अपने बच्चों को पढ़ाते ही नहीं है, वे उन्हें खेती-बारी का काम ही संभालने को देते है. लेकिन यश बदरी भैया की सहायता से गांव में सात दर्जे तक पढ़ता है । बदरी भी सेठ की गुलामी करने वालों का विरोध करते हुए पुलिस से बचने के लिये बाढ़ आयी हुई राप्ती में कूदकर अपनी जान देते है ।

बदरी के बाद यश बिलकुल अकेला व असहाय हो जाता है । क्योंकि उसके राम भैया व भाभी उसके साथ बहुत ही क्रूर व्यवहार करते थे । वे उसे सारा दिन खेतों में काम भी कराते थे तथा खाने के लिये भी कुछ नहीं देते थे । एक दिन वह घर छोड़ कर चले जाते है । कुछ वर्षों बाद जब वह भटकते हुए वापिस अपने गांव आते है । तब भी उसके भाई का व्यवहार उसके प्रति नरम नहीं होता है । उसको पढ़ने का शौक था। लेकिन पढ़ने के लिये पैसों की व्यवस्था कैसे करें । स्यमती उसे खेतों की ओर ध्यान दिला कर उसको उसके भाई से हक लेकर बेचने के लिये कहती है. पहले तो राम भइया उसको बंटवारा देने में आनाकानी करते है । लेकिन बाद में कामरेड की सहायता से मुकदमा करके उसको अपना हिस्सा मिल जाता है । वह उसे बेचकर बैंक में पैसे रखवा कर अपनी पढ़ाई करता है । बी० ए० करने के बाद उसे स्कूल में टेम्परी टीचर की नौकरी मिलती है ।

इसके साथ ही रघुनाथ जैसे शराब का व्यापार करने वाले लोग स्कूल में भी राजनीति करने लगे । स्कूल के टीचरों को तनख्वाह नहीं मिलती थी । जो लोग विरोध करते थे । उसकी गुंडों द्वारा हत्याएं की जाती थी । फिर भी यश उसके यहां टेम्परी नौकरी भी करता था । तथा उसकी बेटी राधा को ट्युशन भी पढ़ाता था । वह राधा को चाहने लगा था । लेकिन उसको पता था रघुनाथ मल की बेटी होने के कारण वह उसे प्राप्त नही होगी । तनख्वाह नहीं देने के कारण राधा अपने पिता का विरोध करती है । तो यश को वह नौकरी से भी हाथ धोना पड़ता है । इसके बाद वह बनारस में आकर एम० ए० करने के बाद उसे स्टेट बैंक आफ इंडिया में दिल्ली में कनाट-प्लेस खाता में अफसर की नौकरी मिल जाती है । उसी बैंक में पद्मिनी नामक एक सुन्दर क्लर्क यश के नजदीक आना चाहती है ।

ल ...64..

लेकिन अभी बाढ़ से ग्रस्त यश अपने आप से संघर्ष करता हुआ अपने अतीत में खोया हुआ था । तभी अचानक पद्मिनी के वहां पर आ जाने से उसकी चेतना वापिस आती है । इसके साथ ही बाढ़ का पानी भी उतरने लगता है ।

लेखक ने बाढ़ का भी सजीव चित्र प्रस्तुत किया हो तथा इस पर व्यंग्य भी किया है । सम्पन्न वर्ग के लोगों के लिये बाढ़ का दृश्य देखना मनोरंजन या पिकनिक की तरह लगता है । वे उसका फोटो लेते है । ताकि अखबार में प्रस्तुत कर सकें ।

जमीन कहीं पर दिखायी नहीं देती है । वृक्ष, छत ही आकाश हो जाती है । सभी लोग अपनी-अपनी छतों पर सुरक्षा को लिये खड़े बाढ़ के बढ़ते हुए प्रकोप को देखते है । कहीं किसी औरत का बच्चा मर जाने से वह उस पानी से ही फेंक देती है । कहीं कोई सहायता के लिये नावें आती है । कुछ हेलिकॉप्टर द्वारा भी सरकारी सहायता की व्यवस्था की गयी थी ।

इसी प्रकार रामदरश मिश्र के "आकाश की छत" उप0 की भांति अज्ञेय ने भी "अपने-अपने अजनबी" उप0 में अस्तित्व का संकट, विदेशी बा लगने वाला परिवेश और अस्तित्व वादी चिंतन का दर्शन किया है ।

लेखक इस बाढ़ के माध्यम से पीड़ित व्यक्ति के अतीत की झांकी को प्रस्तुत करता है । जहां पर शोषित वर्ग व शोषक वर्ग को बताया गया है । इसके साथ ही उसका विरोध करने वाले लोगों का संगठित दल भी बताया गया है । जो आशावादिता का गोचर है । यश भी विभिन्न कठिनाइयों को सहते हुए उसका दृढ़ता से मुकाबला करते है । अंत में अपने लक्ष्य पर सफल होते है । यही लेखक ने बताया गया है ।

दूसरा घर उपन्यास

राम दरश मिश्र द्वारा लिखित "दूसरा घर" उपन्यास का प्रकाशन 1986 में वाणी प्रकाशन, दिल्ली से हुआ है ।

इस उपन्यास में मिश्रजी ने अत्यन्त ही गरीबी में रहने वाले लोगों का जीवन-यापन, आर्थिक संकटों से जुझते हुए लोगों का आर्थिक चित्रण किया है । पढ़े-लिखे लोगों की स्थिति का वर्णन इस प्रकार से किया है जो न तो अपने घर में ही रहकर कुछ कर सकते है, न ही दूसरे देश में रोजगार कमाने के साधन ही उपलब्ध करा सकते है । दोनो ही स्थिति ही उनकी दयनीय दशा होती है । जैसा कि शीर्षक "दूसरा घर" से उसका नाम सार्थक होता है । कि वे स्वदेश में बिता रहे जीवन की भीषण गरीबी से जूझकर देश के दूसरे हिस्से में बस जाने पर स्वयं को विदेशी मान कर समस्याओं को सुलझाने की कोशिश में लगे रहते है । साथ ही राजनीति, का जो क्षेत्रीयता के नरभक्षी चेहरे के रूप में हमारे एकतावादी समाज को खंडित करने की कोशिश में लगी हुई है । उसके द्वारा उत्पन्नसमस्याओं को प्रस्तुत किया है ।

प्रस्तुत उप0 में एक पढ़े लिखे लोगों का एक वर्ग है । जो गरीबी से जूझते हुए अपने परिवार को बचाने के लिये, रोजी-रोटी कमाने के लिये अपना घर छोड़ कर अहमदाबाद में आते है । जहां पर उनको नित्य नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।

शंकर उनमें से एक पात्र है । जो बहुत ही आदर्शवादी है । वह एक स्कूल में मास्तरी के साथ साथ एम0 ए0 फाईनल की तैयारी भी कर रहा है । उसको पढ़ाई में बहुत ही शौक है । तथा वह चाहता है कि एम0 ए0 के बाद पी0 एच0 डी0 करके कालेज में लेकचरर की नौकरी मिल जाये । वह वहां पर एक छोटे से कमरे में रहता है । बाकी अपना परिवार बीबी, बच्चे, व मां को अपने भाइयों के पास छोड़ रखा था । ताकि वहां पर उसकी खेती-बारी की देखभाल भी हो सकें । स्कूल में मस्तरी की इतनी आमदनी नहीं हो पाती है कि स्वंय की पढ़ाई (किताबे

व फीस) तथा परिवारवालों का खर्च वहन कर सकें । उसके भाई कम पैसा भेजने के कारण उसके बीबी, बच्चों को मारता व तंग करता रहता था । लेकिन वह चाहते हुए भी इस छोटी सी जगह में अपने परिवार को नहीं ला सकता था । क्योंकि यहां पर रहने की सुविधा व सफाई नहीं थी ।

दूसरा उसका दोस्त विनोद है जो देखने में तो बहुत ही मौज मस्ती से भरपुर लगता था । लेकिन भीतर से अनेक दर्दों को समेटे हुए बाहर से खुशदिल रहता था । उसका बचपन बहुत ही कष्टपूर्ण बीता । वह अनाथाश्राम में पढ़कर तथा ट्युशन आदि कराके किसी तरह बी० ए० बी० एड० करके यहां पर स्कूल में नौकरी करने लगा ।

तीसरा मित्र कमलेश जो एम० ए०, बी०एड० करके गांव से नौकरी की उम्मीद में शहर में आया था । यहां पर वह अपने मामा के यहां रहता था । ताकि उसे कोई अच्छी से कोई नौकरी मिल जायें जिससे वह परिवार का पालन भी कर सकें । तथा अपने मामा का कुछ बोझ भी बंटा सकें । लेकिन आज के युग में पढ़े-लिखे काबलियत लोगो के लिये नौकरी के लिये कोई जगह नहीं होती है । उसको हर जगह ठोकरें खानी पड़ती है । पहले तो कमलेश को एक स्कूल में दो महीने के लिये सर्विस मिलती है । लेकिन फिर उसी स्कूल में राजनीति दखल आ जाने से उसे छोड़ना पड़ता है । फिर उसे शंकर के कहने पर एक स्कूल में क्वालिफायड प्रिंसीपल की जरूरत होती है । वहां पर उसे रखा जाता है । कहने को तो प्रिंसीपल था लेकिन पैसो के नाम पर स्कूल का सारा खर्चा वगैरह निकाल कर जो बच जाये वह उसकी तनखवाह थी । इस हिसाब से तो उसे महीनो तनखवाह ही नहीं मिलती थी । क्योंकि स्कूल का मालिक गंगा राम शास्त्री राजनीति का प्रमुख नेता था । वह बहुत ही कुटनीतिज्ञ भी था ।

गंगाराम शास्त्री गांव में अपनी एक पत्नी को छोड़ कर आये थे । यहां पर आकर धोखे से, अपने आप को अविवाहित बता कर रमा नामक लड़की से शादी कर लेता है । तथा धोखाधड़ी से एक रईस सेठ की कोठी का मालिक बन कर उसी में स्कूल खोल रखा था । राजनीति में लोग बाहर से कुछ भीतर से कुछ और ही होते है । वे दूसरों को लड़वा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करते है । चुनाव में भी जबरदस्ती

एम0 एल0 ए0 की टिकट लेते है । तथा अपना प्रचार करवाने के लिये गरीब जनता में हिन्दू मुस्लिम में फूट डलवाकर झगड़ा करवाते है ।

शंकर का एक अन्य दोस्त रहमान भी था । जो एक शायर व कवि भी था । लेकिन गरीबी के कारण आगे नहीं पढ़ सकता और एक पब्लिशिंग स्टोर पर नौकरी करता है । प्रतिभा होने पर भी ऐसे लोग गरीबी के कारण उन्मुक्त रूप से अपनी प्रतिभा का विकास नहीं कर सकते । इतनी छोटी उम्र में ही उन्हें जीवनायापन के लिये जूझना पड़ता है ।

ये चारों दोस्त रोज आपस में मिलते है तथा एक दूसरे से वार्तालाप करके एक दूसरे का दुख दर्द को हल्का करते है । तथा एक दूसरे को परदेश में अपने परिवार से बिछुड़ने के गम को भुलाये रखते है । एक दूसरे को कुछ करने के लिये प्रोत्साहित भी करते रहते है ।

शंकर इससे अतिरिक्त स्नेह पाने के लिये अपने एक प्रोफेसर गौतम के पास भी अपने मित्रों को लेकर जाते है । गौतम भी एक कालेज में हिन्दी के लेक्चरर थे । लेकिन वहां भी राजनीति, स्वार्थ, परता अपना रंग बिखरती है । कालेज का प्रिंसीपल पी. के. बहुत ही गलत रवैया अपना कर उनको कालेज से निकलने पर मजबुर करते है । अतः गौतम सर को न चाहते हुए भी इनका स्नेह छोड़ कर जाना पड़ता है ।

इस उप0 में कुछ लोग ऐसे भी थे । जो किसी न किसी तरीके से पैसा जमाकर मेहनत मजदूरी करके, स्वंय भूख निकाल कर भी घर के लिये, अपने परिवार के अलग रहकर उनकी जरूरतो को पूरा करने की कोशिश में लगे रहते थे ।

फेंकू एक ऐसा ही गरीब व्यक्ति था जिसने गांव में 300 रूपया कर्जा लिया था । जो सूद- हर सूद इतना बढ़ता जा रहा है । वह इतना देने के बाद भी मूल धन उसी रूप में बना हुआ है । उसके गांव में मां, बीबी, बच्चे, है । वह स्वंय खाली चना खाकर काम चला देता है । वह दिन को सागभाजी बेचता तथा रात को मिल में नौकरी करता । तथा कभी कभी महीने में एक-दो बार अपना खून भी बेच कर आता है । ताकि कुछ पैसों की प्राप्ति हो सके । उसमें से कुछ अपने परिवार के खर्चे के लिये तथा कुछ कर्जा उतारने के लिये भेज देता था ।

इच्छा होते हुए भी बरसों तक अपने परिवार से मिलने नहीं जा पाता । क्योंकि जाने से और खर्चा भी होगा और दिहाड़ी भी जायेगी । यही सोच कर वह बेचारा दिन-रात बिना आराम किये, बिना कुछ खाये पिये जिन्दगी को ढो रहा था । एक दिन हिन्दू-मुस्लिम के झगड़े होने पर उस बेचारे की लाश एक नाले के पास पड़ी हुई मिलती है । क्योंकि उसका उसका कोई घर नहीं था । वह तो दिन-रात काम में लगा रहता था । कभी कभी विश्राम करने के लिये एक पेड़ के नीचे ही सो जाता था । शोषण के रूप में सिसता-पिसता वह स्वयं अपने जीवन को ही होम कर देता है ।

एक पारस भइया के जो शंकर के यहां कभी कभी आया करते थे । तथा दुनिया भर की राजनीति खबरें बताया करते थे । ये महाशय दिन-रात ट्यूशन करते थे । तथा पैसे कमा कर अपने घर परिवार वालों की शानो शौकत पूरी करने के लिये भेजते थे । स्वयं परिवार से अलग रहकर कृष्ण की तरह जीवन पालन करते थे ।

गांव में तो रहने के लिये तो सुख-सुविधा मिलती है । वहां पर रहती हवा अपनी जमीन की मिट्टी, गंध तो प्राप्त होती है । लेकिन जीविका चलाने के लिये रोजगार नहीं मिलता है । इसके लिये लोग घर छोड़ कर दूसरे स्थान कमाने के लिये जाते है । परन्तु वहां पर रहने के लिये जगह नहीं मिलती है । सड़ी गली, बदबूदार जहां तक फैली हुई गंदगी । लोग चाल में एक कमरे में पांच-छह लोग मिलकर रहते है. तंग गलियां, हवा का कहीं नामोनिशान नहीं, ऐसे नरक मे भी लोग रहकर जीवन यापन करते थे ।

कमलेश के मामा भी एक ऐसी ही बस्ती में रहते थे । जिसमें एक छोटा सा कमरा था जिसमें पांच-छह सदस्य रहते थे । उसके मामा एक मिल में नौकरी करते थे । कम तनख्वाह में भी संतोष का जीवन व्यतीत करते थे । तथा दूसरों के दुख में शरीक हो कर उनकी मदद करने को तैयार रहते थे । पैसा की तंगी होने पर भी अपनी लड़की शोभा को पढ़ाते है ।

इस उप० में दहेज की समस्या को भी बताया गया है । दहेज न होने की वजह से कमलेश का मामा पहले तो अपनी लड़की का ब्याह दोहाजू व्यक्ति से करना

चाहता है लेकिन बाद में बी0 ए0 पास लड़के से तय होता है । जो पढ़ा लिखा होने के साथ बेरोज़गार होने पर सिर्फ पन्द्रह हजार में रिश्ता पक्का करते है । यहां पर जाति-पाति का भेदभाव बताया गया है । स्कूल में गरीब, कमजोर हरिजन का लड़का को पीटा जाता है । ताकि उनको स्कूल जाने से ही नफरत हो जाये । उनको यह कहकर कोसा जाता है कि ये नीच जाति के लड़के पढ़ कर कौन सा लाट गर्वनर बन जायेगें ।

गरीब या छोटी जाति के लोग भी इसी उम्मीद पर अपने बच्चों को पढ़ाते है ताकि वह उनके जैसी जिंदगी न जीकर कुछ काबिल इंसान बन सके । लेकिन स्कूल में बच्चों को इतना पीटा जाता है । जो बच्चों को विद्या अर्जन के नाम के ही नफरत आ जाती है । बच्चों का पढ़ाई से ध्यान हटने का एक कारण उन मास्टरों का भी है । जो बच्चों को विद्या के नाम से भयभीत करते है ।

कमलेश के पिता तो ब्राहमण थे । इसी लिये रोजी-रोटी न कमा सकने के कारण वह घर घर भीख मांगते थे । भीख मांग मांग कर ही अपने परिवार का पालन पोषण करते थे । उसी से उन्होने मेहनत कराके कमलेश को एम0 ए0 बी0एड0 कराया था । ताकि वह उसके जैसी जिन्दगी नहीं जी सके । कमलेश के पिता के मरने पर वह अपने छोटे भाई, बहिन व मां को गांव में छोड़ कर यहां शहर में नौकरी करने के लिये आता है । लेकिन जब गंगा राम शास्त्री जैसे लोग उसे प्रिंसीपल के नाम पर भी कुछ भी रूपये नहीं देते है तो वह स्कूल में इस्तीफा देकर कुछ रोजगार तलाश करने के लिये कहता है । वह ऑटोरिक्शा चला कर या साग-सब्ज बेचकर भी पैसे कमा सकता है ।

शिक्षा व्यक्ति के केवल मानसिक स्तर तक ही सीमित है । उससे व्यक्ति अपना जीवन निर्वाह नहीं कर सकता है । आधुनिक युग में तो शिक्षा का कोई मूल्य नहीं रह गया है । शिक्षित व्यक्ति को दोनो तरफ से मार मिलती है । अनपढ़ व्यक्ति को कुछ भी काम मिले, वह कर लेगा । लेकिन पढ़े-लिखे व्यक्ति का तो स्वाभिमान सामने आता है । जिसकी वजह से कुछ कर नहीं सकता । इसके लिये आजकल के नवयुवक शिक्षा अर्जित करने के बदले अपने हाथों के काम में ज्यादा दिलचस्पी लेते है ।

...70...

शिक्षा के क्षेत्र में राजनीति के आने से शिक्षा चौपट होती जा रही है। नेता लोग सब जगह अपने स्वार्थ को लेकर खड़े होते है। तथा अपना काम न होने पर कुछ भी करवाने से नहीं गुजरते है। वे देश की एकता को खण्डित करके हिन्दू-मुस्लिम में फूट डलवा कर झगड़े करवाते है। सब जगह दंगे-फसाद होते है। कुछ लोग तो केवल लीडर कहलाने की खातिर सब जगह अपना आंतक फैलाते है। वे केवल दूसरी जाति में ही नहीं वरन अपनी जाति में दादागिरी करके सबको आंतकित करते है। दंगे-फसाद के समय हिन्दूओं की लड़की को मुसलमान उठाकर ले जाते है। उसे जबरदस्ती मुसलमान बनवा कर अपना वर्ग विस्तार करवाते है। परन्तु कुछ लोग ऐसे भी है। जो अपनी जाति के इन गलत इरादों को देखकर उसका विरोध भी करना चाहते है। लेकिन उनको आंतकित किया जाता है।

इन्हीं फसादों के समयकमलेश के मामा की लड़की को मुसलमान उठा कर ले जाते है। लेकिन उनके गिरोह में भी एक फरिश्ते के हाथों वह बचकर वापिस आ जाती है। फिर भी लोग उसके सुरक्षित होने का विश्वास न करके उसकी शादी का रिश्ता तोड़ देते है। ऐसे समय में विनोद उस लड़की को बदनामी से बचाने के लिये तथा दोस्ती के रिश्ते को ओर मजबूत करने के लिये उसके साथ शादी कर लेता है।

शंकर भी इतनी मेहनत के बाद, तथा परिवार की विरक्ति के बाद, शिक्षकों की चमचागिरी न करने की वजह से एम0 ए0 में थर्ड क्लास का प्राप्त होता है। और पढ़ाई की उम्मीद छोड़कर अपने परिवार को यहां पर वापिस बुलाने की बात करता है। इसके अलावा रूपलाल जैसे कुछ पहलवान लोग भी है। जो बस्ती में अपना आंतक फैलाये हुए है। ये लोग हर समय कुछ भी करने को तैयार रहते है।

अशरफी जैसी छोटी जाति की सुन्दर लड़की के होने से उसकी मां गांव में जमींदार की निगाह से बचाने के लिये उसकी शादी एक बुर्जग व्यक्ति के साथ करा देती है। जिससे उसकी दहेज की समस्या भी नहीं रहती है।

इस प्रकार पूरे उप0 में सब जगह गरीबी इस कदर छायी हुई है। लोग किसी तरह जी रहे है।

दिनेश वर्मा, शास्त्री जैसे लोग ही अपने स्वार्थ वश आगे निकल आये है । लेकिन उनको भी पैसे के बावजूद भी सुख प्राप्त नहीं है । शास्त्री की पत्नी रमा को जब मालुम चलता है । कि उसका पति अब किसी तीसरी लड़की नर्स के पीछे पड़ा हुआ है । वह लड़की भी असलियत जानने के बाद अपने आप को उससे छोड़ा देती है । और रमा भी उसे हमेशा के लिये छोड़ कर अपने पिता के घर चली जाती है ।

इस प्रकार इस उप0 का अंत होता है ।

.....

रात का सफर

कवि रामदरश मिश्र द्वारा लिखित यह लघु उपन्यास "रात का सफर" 1976 को राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली से हुआ तथा इसका द्वितीय संस्करण 1987 को इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन दिल्ली से हुआ ।

"रात का सफर" उपन्यास में मिश्र जी ने गांव की अपेक्षा नगर जीवन का अधिक चित्रण किया है । इसमें ऋतु नामक लड़की के वैवाहिक जीवन के अधिकार का चित्रण किया गया हैं । इसके साथ ही उन लड़कियों के सफर की कहानी है । जो शादी से पहले उनींदी रहने तथा रात में पति के प्यार पाने के लिये के सपनों को देखती है । लेकिन शादी के बाद पहली ही रात पति की तथा ससुरालवालों की उपेक्षा पाकर उनके सपने चूर-चूर हो कर बिखर जाते है । लेकिन फिर भी वह टूट-टूट कर पल-पल जीने के लिये अभिशाप्त रहती है । लेकिन आज के आधुनिक युग में लड़कियां पढ़ लिख कर अपना अधिकार मांगने के लिये सजग हो रही है । न मिलने पर वह उसका विरोध कर स्वंय अपने ढ़ग से जीवन-यापन करना पसन्द करती है । न कि घुट-घुट कर मरता ।

इस उप0 में भी इसी प्रकार दिल्ली के मजिस्ट्रेट राकेश की बेटी ऋतु अपने प्रति डॉ0 की छह साल तक कैद यातना सहकर अंत में उसको सैर आम चांटा मारकर उसके बंधनों से मुक्त होकर अपने पिताजी के साथ लौट आती है ।

"रात कासफर" ट्रेन के सफर का प्रतीक है । वह ट्रेन में अपने पिताजी के साथ इस लम्बी रात का सफर करती है । जिसमें वह अपने उतीत के बिताये गये इन छह वर्षों के लम्बे सफर को याद करती है ।

उसे याद आता है अपने अतीत के वह सुहावने दिन । जब वह पिता के यहां उनकी अद्भुत प्यार की छाया में पली थी । वह भी अन्य लड़कियों की तरह अपने विवाह के सुन्दर सपने संजाती है । उसके पति उसकी शादी एक एम0बी0बी0एस0 डॉक्टर के साथ तय कर देता है । वह भी उसकी सुन्दरता, बाह्य आकर्षण को देख कर उसके प्रति अपने आप समर्पित हो जाती है । लेकिन जब वह अपने ससुराल में प्रवेश पाती है तो वहां का माहोल उसको बहुत ही रहस्यमय लगता है । घर

में सास, श्वसुर, देवर तथा दो क्रूर नन्दे थी । उसकी दोनो नन्दे उसकी बाडीगार्ड की तरह हर समय उसके रोने हंसने का ध्यान रखती थी । पहली रात को भी उसे अपनी नन्दों की संरक्षिता में सोना पड़ता है । इसी तरह छह राते बीत जाती है । लेकिन उसको अपने पति से मुलाकात नहीं होती है । वह इन छह रातों में घरवालों की उपेक्षा लेकर अपने पिता के घर चली जाती है । इसके बाद छह महीने बाद वह अपने एम० ए० फाइनल को परीक्षा देकर जब वापिस ससुराल जाती है तो उसे बैल की तरह दिन भर कार्य में जुटा देते है । लेकिन उसको अपने पति० का कोई पत्र वगैरह नहीं प्राप्त होता है ।

नारी पुरुषों के लिये खिलौना रही है । उसकी इच्छा हो तो खेले, न इच्छा हो तो उसे पड़ी रहने दे, इच्छा हो तो प्यार का दान दे दे, न इच्छा हो तो मौन रहे या दुतकारता रहे । उसकी अपनी स्मिता का सम्मान कभी नहीं किया गया । इसी प्रकार ऋतु को भी अपनी पति द्वारा उपेक्षा मिलती है । दस महीने के बाद डॉक्टर घर आता है । तब भी वह उससे कोई मुलाकात नहीं करता है । वह सोचती रहती है । कि किसके लिये इस घर में ब्याह कर लायी गयी है । क्या शादी केवल दान-दहेज लेने के लिये, तथा घर में काम करने वाली नौकरानी बनाने के लिये, की गयी थी । लेकिन उसको कहीं से कोई उत्तर नहीं मिलता है । वह सब कुछ सहन करती जाती है ।

जब उसके देवर की शादी होती है । तो भी डॉक्टर आकर दो दिन बाद उसी तरह उदासीन होकर चले जाते है । तभी उसको अपनी देवरानी से मालूम होता है । कि डॉक्टर ने वहां पर अपने साथ एक नर्स श्यामा को रखा हुआ है । इतना सुनने के बाद भी वह किसी बात की किसी से आपत्ति नहीं करती है । जबकि घर में सभी को इस रहस्य को मालूम था कि डॉक्टर का शादी से पहले ही नर्स के साथ सम्बन्ध थे । वह तो शादी की बात को स्वीकार नहीं करता था । लेकिन पिताजी के जोर जबर दस्ती के कारण तथा श्यामा दूसरी जाति की स्त्री होने के कारण वह उसे छोड़ नहीं सकता था । इसके लिये वह ऋतु के साथ शादी स्वीकार कर लेता है । आजकल का पढ़ा लिखा युवक होने पर पिताजी का विरोध

नहीं कर पाता है । और अपनी पत्नी को यातना भरा जीवन झेलने पर छोड़ कर स्वंय आनंद मनाने चले जाते हैं ।

इसमें स्त्री का क्या दोष है जो भुगतना तो उसे पड़ता है । पति के होते हुए भी उसे पतिव्यक्ता का जीवन बिताना पड़ता है । लेकिन संस्कार मयी स्त्रियां भी चुपचाप मुक होकर पति के साथ बंधी रहने का रुढ़िगत संस्कार को ढोती चलती है ।

कुछ दिनों बाद ऋतु का पिताजी आता है । वह उसे अपने घर में ले जाता है । लेकिन उसका इस प्रकार से स्वास्थ्य देखकर उसकी मां के बार बार पुछने पर वह बताती है । कि उनसे अभी तक मुलाकात ही नहीं हुई है । तब पिताजी उसको पत्र लिख कर बुलाते है । तो वह चार दिन वहां पर उसको साथ घुमाता फिराता है तथा यह आश्वासन देता है कि शीघ्र ही मकान लेकर उसको लिवा ले जायेगा । उदार स्त्री पति के भुलावे में भी जल्दी आ जाती है । लेकिन क्रूर पति उसको छोड़कर फिर नहीं आता है ।

तभी वह अचानक अपने पिता के साथ उसके क्वार्टर में जाकर उसको श्यामा के साथ रंगे हाथों पकड़ती है । ऋतु के पिता जी उसे डॉक्टर के पास रहने के लिये कहते है । लेकिन बहुत ही आनाकानी करने के बाद उसे ऋतु को साथ रखना मंजुर कर लेता है । साथ में रहने के बावजूद भी डॉक्टर अपना अधिकांश समय बाहर ही श्यामा के साथ व्य तीत करते थे । ऋतु यह सोच कर कि कभी न कभी लाईन पर आ जायेगें । उनका बेचैनी से इंतजार करती थी । लेकिन डॉक्टर को शायद नर्स ज्यादा समायी हुई थी । तभी उनका तबादला होकर दूसरे शहर आना पड़ता है । यहां पर आने के बाद वह कुछ समय बाद सर्विस छोड़कर अपनी डिस्पेंसरी खोल देता है । ऋतु के मन में यह निश्चिंतता होती है कि चलो श्यामा से तो पिंड छूटा । उसके पति अब ज्यादा समय बाहर बिताने लगे कभी कभी तो दो-दो दिन रात को घर पर नहीं आते तथा काम की व्यस्तता बताते । लेकिन एक दिन ऋतु भी पेट दर्द कर बहाना बनाकर उनकी डिस्पेंसरी ढुढ़ते ढुढ़ते वहा पहुंचती है । तो देख कर दंग रह जाती है। कि डॉक्टर ने वहां पर श्यामा के साथ गृहस्थी बसा रखी है ।

डिस्पेंसरी की साथ में कराती है। पोल खुल जाने पर डॉक्टर स्वीकार करता है कि वह उसके बिना नहीं रह सकता है। यदि वह चाहे तो साथ रह सकती है। लेकिन ऋतु रखैल के साथ रहने से बेहतर अकेला रहना ज्यादा स्वीकार करती है।

---- वह दिन भर अकेली उदास पड़ी रहती, कभी कोई चित्रकारी तनाती यूं ही महीने, वर्ष व्यतीत करने लगी।

तभी एक बार उसकी पड़ोसन मिसेज शर्मा उससे कहती है कि तुम अपना नया जीवन क्यों नहीं शुरू करती हो। "प्रेम के शव को ढोने से कोई फायदा नहीं, जीवन अमूल्य होता है। इससे सम्बन्धित जब किसी वस्तु का मूल्य चुक जाय तो उसे छोड़ ही देना चाहिये। जीवन के संदर्भ में हर वस्तु की सार्थकता और निरर्थकता की पहचान होती है। यह हमारी मोहवृत्ति है। कि हम अपने से जुड़ी निरर्थक से निरर्थक वस्तु को चिपकाये घूमते है।" 10

मिसेज शर्मा की बात को सुनकर उसने महसुस किया कि अब उसे निर्णय ले ही लेना चाहिये। वह अपना सामान बाँधकर पिताजी के साथ डॉक्टर के पास जाने की सूचना व चाबी देने जाती है। वहां पर श्यामा सबके सामने उसकी बेइज्जत करती है तो उसको भी सहन नहीं होता है वह भी उसे खरी सुनाती है। जिसे सुन कर डॉक्टर को गुस्सा आता है। ऋतु का भी रुका हुआ बांध अपनी सीमा छोड कर उसका हाथ डॉक्टर के गाल पर चांटा मारकर निकल जाता है। वह अपने पिताजी के साथ अपनी नयी दुनिया बसाने के लिये चल पड़ती है।

ऋतु के पिता ट्रेन में बैठे हुए सोचते है कि मैं मजिस्ट्रेट होकर भी उसे न पहचान सका जबकि मैं तो बड़े-बड़े अपराधियों को दंडित करता हूँ। लेकिन वह अपनी बेटी के इंसाफ नहीं कर सका। लेकिन उसमें उनका क्या दोष हर पिता देख कर अपनी बेटी के लिये योग्य वर ही तलाशता है। लेकिन उनके भाग्य को वह नहीं बदल सकता।

स्त्री का यदि एक बार विवाह हो जाता है। तो वह उस पर ठप्पा लग जाता है। चाहे वह अनछुई क्यों न हो। उसको फिर पुरुष प्रधान समाज स्वीकार करने में हिचकिचाता है। उसके साथ रंग-रलिया मनाने को तैयार होगा लेकिन

अपने साथ जीवन भर के लिये रखना स्वीकार नहीं करेगा । उसको हर साल ताजा चाहिये । चाहे वह स्वयं कितना ही बासी क्यों न रहा हो ।

ऋतु सोचती है - "बिना टिकट के यात्रा करना जुर्म है और दूसरो के टिकट पर भी यात्राकरना जुर्म है । मैं भी तो जिन्दगी का सफर कर रही हूँ । मेरे पास तो सफर का टिकट था लेकिन मैं मुजरिम बन कर कठघरे में खड़ी हूँ । और श्यामा दूसरे के टिकट पर सफर कर रही है । और उसका सफर कितना सुखी है । ।।

इस प्रकार यह नारी जाति पर होने वाले अत्याचारों का जीता-जागता चित्रण है । जो बहुत ही मर्मस्पर्शी है । पति से उपेक्षा पाने के बाद ऋतु सोचती है वह या तो चित्रकारी करेगी या कोई नौकरी करेगी । स्वतंत्र रूप से अपना जीवन बितायेगी ।

इस प्रकार मिश्र जी ने इस उप0 द्वारा नारी पुरूषों के अत्याचारों के विरूद्ध चुनौती देती हुई बतायी गयी है । वह भी अपने स्वाभिमान से जीवन जी सकती है ।

.....

"बिना दरवाजे का मकान उपन्यास"

समीक्षक मिश्रजी द्वारा लिखित यह लघु उपन्यास "बिना दरवाजे का मकान" 1991 को विद्यार्थी प्रकाशन दिल्ली से हुआ यह उपन्यास उतना ही प्रतीक है जितना अज्ञेय जी का "आँगन के पार" उपन्यास ।

मिश्र जी ने यह उपन्यास दिल्ली जैसे बड़े महानगर की एक नई बसती हुई कॉलोनी में हो रही घटनाओं को लेकर लिखा गया है । जिसमें एक काम करने वाली औरत के माध्यम से बड़े-बड़े घरों में होने वाले नैतिक-अनैतिक कार्यों का पर्दा फाश किया गया है । जो देखने में बहुत ही शरीफ व इज्जतदार व पैसे वाले लोग होते है । उनके घरों में होने वाली परिस्थितियों को बताया गया है । कि वे स्वंय घिनौने कार्य करने के बावजूद भी दूसरों पर छींटे लगाती है । जो गरीब लोग है । उन पर इल्जाम लगाकर अपने कुकृत्य को ढंकने की कोशिश करते है । इस उप0 में जिंदगी का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया गया है । तथा जिंदगी में घटने वाली अनेक समस्याओं का निरूपण भी किया गया है । इसलिये यह उप0 अन्य सभी उपन्यासों से भिन्न है । यह उप0 अतीत के ताने-बानों से मिलकर बना है ।

इस उप0 की मुख्य पात्र दीपा अपने ससुराल में सास व नन्द के अत्याचारो से पीड़ित होने पर तथा अपना जीवन सुखी व खुशमय बनाने के लिय अपने पति के साथ दिल्ली में आ जाती है । रिक्शा चलाते समय दुर्घटनावश उसका पति शारीरिक रूप से अकर्मण्य होकर एक जगह पड़ा-पड़ा मरियल जिंदगी व्यतीत करता है । इसके बाद दीपा जीवन पालन के लिये दूसरों के घर झाडू, पोंछा, बर्तन साफ करती है । इसी के साथ उसकी मर्यादा रक्षा की संघर्ष कथा शुरू होती हैं । वह जिन घरों में कार्य करती हैं । उन लोगों के व्यवहार, आचरण, व नैतिक स्तर का सबके सामने पर्दाफाश करती है ।

लगातार बीमारी में होने वाला खर्च, रोजी-रोटी का खर्च, घर से आने वाली पैसे भी मांग, तथा उसके द्वारा बनवाये गये मकान का कर्ज आदि से दीपा टूट सी जाती है । मकान बनवाने के लिये दीपा ने जिन लोगों से कर्जा लिया था वे लोग उसके काम पर न आने पर उसके घर पर आकर उसकी बेइज्जत कर जाते थे । तथा

उस पर कीचड़ उछाल जाते थे। वह बोलती थी कि वह काम करती है। उसी का पैसा लेती है। कोई चोरी नहीं करती है। वह भी इंसान है। उसे भी अपना पति, स्वास्थ्य तथा घर का काम भी देखना पड़ता है। इन सबसे बड़ा दुख तभी उसे होता है। जब वह देवी जागरण पर "मइया मेरे लाल बख्श दे" सुनती है। उसके मन में सन्तान की इच्छा बहुत ललकती थी। लेकिन उसके पास संतान न थी और उसका पति भी अब अपाहिज व बीमार हो गया था। सो वह मन ही मन में अपनी इच्छा को दबाती रहती थी। और अपनी मर्यादा की रक्षा करती है। लेकिन जब वह किसी के घर में काम पर नहीं जाती तो सेठानी आकर उसको उलाहन दे जाती है कि मरद बीमार पड़ा है तो खुद सजधज कर रास-लीला करने जाती हो तब दीपा से यह सब सहन नहीं होता है। वह कहती है कि हम गरीब जरूर है लेकिन हमारी भी इज्जत हैं। आप लोगों के घरों की बेटियां घर से भाग जाती हैं। कहीं चोरियां करती है तो कही बहू को आग लगा कर जलाया जाता है।

दिपा स्वंय बुढ़िया के घर उसकी बहू को जलाते देखती है। तब बुढ़िया दीपा से बेटी के सा व्यवहार करती है। तथा उसे मुंह बंद करने के लिये 700 रुपये मकान बनवाने के लिये कर्जा देती है। दिपा पहले तो पुलिस को सच बताने की सोचती है। लेकिन फिर वह भी अपने स्वार्थवश रुपये लेकर चुप होकर अमानवीय अत्याचार को भी सहन कर लेती हैं।

फिर दीपा एक दूसरे घर इंसपेक्टर की बात बताती है। जो स्वंय तो रिश्वत ले लेकर घर भरता है। उसकी बीबी व बेटी सजधज कर दूसरों से ऐयाशी करते हैं। एक दिन मौका पाकर इन्सेपक्टर भी दीपा को सौ रुपये देकर उसको पाना चाहता है। लेकिन वह वहां से भाग आती है। इन्सेपेक्टर की बेटी एक मर्द के साथ जेवर-पैसा लेकर भागने की योजना बना रहे थे। लेकिन इस मौके पर दीपा ही उनके घर की इज्जत बचाती है। वे भी दीपा को पांच सौ रुपये देकर स्वंय बेइज्जत होने से रोकती है।

दीपा जहां भी जाती है। वहां सभी उसको रुपये देकर झुलाने की करते है। लेकिन वह गरीब होने पर भी अपने आपको बेचती नहीं है। उत्तम नगर के उस

इलाके में तो दिन दहाड़े तीन-चार व्यक्ति मिलकर अकेली औरतों के पीछे पड़ते थे। ये देख कर दीपा को भी उस इलाके में जाते हुए डर लगता है। तो वह उस घर का काम छोड़ने के लिये कहती है। वह अपनी इज्जत पर खेलकर यहां काम करने नहीं आयेगी। तो मालकिन उसको कहती है तुम लोगों में दो-दो टके में इज्जत बेचती फिरती है। तभी दीपा भी गुस्से में बोल पड़ती है। "कि मैं सबके घरों की इज्जत आबरू बेचते होते देखी है लेकिन मैं कुछ बोलती नहीं, किसी से कुछ कहती नहीं। हमारे गांव में भी बड़े आदमियों के मरद और औरत सबको जानती हूँ। हमारी जाति की औरते अगर बिकेगी तो गरीबी की मार से बिकेंगी और आपके यहां की औरते बिकती है खाली शौक पूरा करने के लिये। गरीबी से बिकना बेभिचार नहीं है बीबी जी, सौकिया मरद की गोद बहलते रहना व्येभिचार है।"[12] एक दूसरे पुजारिन के बच्चे है जो अपने आप को बहुत ही शरीफ तथा पवित्र मानते है। वे समझते है कि उनके बच्चे पढ़े लिखे बहुत ही सीध सादे है। लेकिन बाहर वही लड़का बदनाम लड़कों के साथ जुआ खेलता है, नशे की गोलियां खाता है और लड़कियां छेड़ता है। और उनकी लड़की चोरियां करती है।

इस प्रकार लेखक समाज के ऊँचे घराने के लोगों का पर्दाफाश किया है। कि वे स्वंय कितने गिरे हुए है और गलत कार्य कर रहे है। लेकिन फिर भी इज्जत का बट्टा लगाये हुए चलते हैं। अपने आप को शरीफ कहते है। दूसरी ओर दीपा जैसी गरीब औरत होते हुए ही उसके ऊपर कीचड़ उछालती है। क्योंकि वह गरीब है। क्या गरीब व्यक्ति की कोई इज्जत नहीं होती है। सारी शराफत, इज्जत पैसे वालों के लिये ही होती है। वे अपने आप को ढकने के लिये दूसरों को उघाड़ती है। उसको तो पैसें देकर उसका मुंह बन्द करवा देती है। लेकिन दीपा फिर भी उनकी चुपचाप सुनती है उनकी इज्जत नहीं उछालती है। वे ही उसे हर समय उपालेभ देती है तथा उस पर इल्जाम लगाती है। पैसों की कमी के बावजूद भी दीपा सबके साथ संघर्ष करते हुए भी अपनी इज्जत पर दाग नहीं आने देती है।

जबकि एक ओर वह संतान की भूख से प्रेरित है और दूसरी ओर उसको देह की भूख भी सताती है। जबकि उसका पति अकर्मव्य जीवन व्यतीत करता है। वह

भीतर ही भीतर अपने पति के एक दोस्त बसंत को चाहने लगी थी । तथा उससे अपनी इच्छा भी पूरी करना चाहती थी । लेकिन बसंत उसको हमेशा भाभी का सा सम्मान देता था, वह उसकी इच्छा को ठुकरा देता हैं । बाद में फिर दीपा को भी अपनी गलती का अहसास होता है कि वह अपने मरद के होते हुए क्या करने जा रही थी । फिर वह सोचती है । उसकी जिंदगी भी बिना दरवाजे के मकान की तरह हो गयी है जिस प्रकार उसके मकान में दरवाजा न होने के वजह से कोई भी कुत्ता, बिल्ली, जानवर घुस आते है । उसी प्रकार उसकी जिंदगी में न जाने कौन-कौन आते है ।

इस प्रकार मिश्र जी ने दिल्ली जैसे महानगर में होने वाले नैतिक अनैतिक कार्यों का चित्रण निरूपण किया है । वहां पर तो सुनसान रास्तों पर या अकेले स्त्री का जाना ठीक नहीं है । कब कोई निकलकर गुंडा कुकर्म कर सकता है । स्त्रियों की इज्जत की सुरक्षा नहीं हैं । चाहे वह कितनी ताकतवर क्यों न हो । चार गुंडे मिलकर उससे जबरदस्ती करेगें या उसके घर में अकेले घुस कर उसको तंग करेंगे तो वह अकेली क्या कर सकेगी । अत: बड़े-बड़े शहरों में स्त्रियों का अकेले रहना या बाहर निकलना खतरे से खाली नहीं है । समाज के बढ़ते हुए गुंडा गर्दी की तरफ लेखक ने संकेत किया है ।

दूसरा लेखक ने यह भी बताया है कि एक ओर समाज में पैसे की अधिकता के कारण गलत कार्य होते है, दूसरी ओर पैसे की कमी के कारण लोग पैसों से उन्हें जबरदस्ती खरीदने की कोशिश करते है । परन्तु जिसका ईमान खोटा होता है वह पैसे की चमक से बहक जाते है । जिसको अपनी इज्जत प्यारी होती है । वह साहस करके उनके मुंह पर थूक देती है । अपढ़ स्त्री भी संघर्ष करके जीवन से अपना मुकाबला करके भेड़िये के चुंगल से अपने आपको छुड़ा सकती है । पढ़ी-लिखी स्त्री भी अपने शौक की खातिर इसमें डूब जाती है । लेखक ने बड़े शहरों में बसों की समस्या को भी बताया है । कि बस के लिये घंटो लाइनों में खड़ा होना पड़ता है या तो बस समय पर आयेगी नहीं, या स्टैन्ड से आगे या पीछे रुकेगी । लोग धक्के देकर निकल जायेंगें । रोज यह स्थिति होती है । जिसकी वजह से नौकरी करने वाले व्यक्ति समय पर पहुंच नहीं पाते और उन्हें अफसर की डांट खानी पड़ती

है । जो लोग मध्यम वर्ग के या गरीब वर्ग के है वे तो बीमार व्यक्ति को असुविधा पूर्ण बस में कैसे ले जा सकते है ।

बड़े शहरों में लोगों को ठगने के लिये तमाम बड़ी बूटियां लिये हकीम घूमते है तथा कई देवी जागरण के नाम से धर्म की आड़ में जनता से पैसा बटोर ते है ।

आधुनिक युग की बढ़ती हुई समस्यों की ओर भी ध्यान आकर्षण किया है कि सरकार हरिजनों के लिये उनके पद सुरक्षित रखती है । अपने वोट को पाने के लिये हरिजनों को नौकरी व पदोन्नति मिलती है, चाहे उनमें योग्यता हो या न हो, इस प्रकार रोजमर्रा की जिंदगी में होने वाले संघर्ष, हादसों का ज़िक लेखक ने किया है । जो प्रायः ऐसी घटनाये सबके साथ घटती ही चली जाती है । लेकिन उसका कोई समाधान नहीं है । इनसे जूझने के लिये साहस व संघर्ष करने के लिये ताकत की ओर ध्यान आकर्षित करने की प्रेरणा देते है ताकि इनसे निपट सकें ।

.....

आदिम राग {बीच का समय}

मिश्रजी द्वारा लिखित यह लघु उपन्यास "आदिम राग" 1993 को "वाणी प्रकाशन" से प्रकाशित हुआ है । जिसका दूसरा नाम {बीच का समय है । }

मिश्र जी इस उप0 में शिक्षक व छात्रा के साथ का रागात्मक सम्बन्ध को प्रस्तुत किया है । इस उप0 में मिश्र जी ने न तो कोई गांव की समस्या को प्रस्तुत किया है न ही शहर के वातावरण को ही लिया है । इसमें तो शिक्षक व छात्रा के संवाद से शुरू होकर अंत भी उनके वार्तालाप से होता है । इनके बीच का सौंदर्य बताने के लिये प्राकृतिक परिवेश को भी दिया गया है । इसमें नर-नारी के बीच सौंदर्याकर्षण को लिया गया है जो एक दूसरे से खिंचते चले जाते है ।

प्रो0 शीत गुजरात की शिक्षण संस्था में अध्यापक है । उत्तर प्रदेशीय परिवेश होने के कारण वे संस्कार उनके मूल में विद्यमान रहते है ! वे इन संस्कारों को न चाहते हुए भी झेलने को बाध्य थे, उसका विरोध करना या तोड़ देना उनके वश में नहीं था । बालवास्था में ही अनमेल विवाद होने के कारण भी वे दाम्पत्य सुख से वांचित थे क्योंकि उनकी पत्नी उनसे बड़ी व देखने में असुन्दर थी । फिर भी वे कर्तव्य बोध से उसे नकार नहीं सकते है, न चाहते हुए इस मानसिकता से हट पाते है । वे सोचते है इसमें उस निर्दोष का भी क्या दोष । फिर भी वे उसे न तो स्वीकारते है, न ही उसे छोड़ सकते है । लेकिन जब उनकी शिष्या रीता एकांत पाकर उनसे मिलने की, उनके साथ घूमने की इच्छा व्यक्त करती है तो वह जरा सी आत्मीयता पाकर सहज ही आकर्षित हो उठता है । वह एकांत में भी रीता के बारे में सोचता है । उसको पाना चाहता है किन्तु शरीर की भूख से वह अतृप्त थे । वह उसे उस रूप में सोचता है, जबकि रीता प्रो0 शीत से एक माधुर्य पवित्रता का सम्बन्ध चाहती थी । उसको अपने शिक्षक के प्रति एक विशेष श्रद्धा भी थी । लेकिन गुजराती संस्कार के माहौल स्वरूप लड़कियों का स्वछंद घूमना, मिलना, स्पर्श करता आदि करने में कोई आपत्ति नहीं है । क्योंकि वे एक मर्यादा में सीमित रहती है । रीता का प्रो0 शील के साथ एकांत में मिलना, उसके घर जाना आदि को देखकर प्रो0 सोचता है कि वह उससे क्यों मिलना चाहती है । क्या वह उसे चाहती है यदि चाहती है

तो वह उसे स्वीकारती क्यों नहीं है । रीता छुट्टियों में प्रो० शील को अपने गांव में मौसी-मौसा जी के पास चलने के लिये निमंत्रण करती है । लेकिन वह प्रोफेसर होने के कारण एक बदनामी भी स्वीकार नहीं चाहता था । वह यह नहीं चाहता था कि कल कोई उनके सम्बन्धो के प्रति उंगली उठाये । लेकिन रीता के न मिलने पर भी बेचैन हो उठता था, पता नहीं क्यों नहीं आयी, वह उसके वोट में किससे पूछे । यहीं सोचता रहता था । दिवाली की छुट्टियों में प्रो० शील अपने घर जाने के लिये सोचता है तभी अचानक रीता उसके घर आती है उसको अपने साथ गांव ले जाने के लिये । लेकिन वह पहले तो कहीं नहीं जाता है । वह रीता के बारे में ही सोचता रहता है । वह लड़कियों के सम्पर्क से दूर ही रहता था । लेकिन इससे पहले भी एक दो लड़कियाँ इनके संपर्क में आना चाही थी लेकिन वह उनके साथ अलगाव में रहता था क्योंकि उसके मस्तिष्क में एक औरत जो उसके गांव में बैठी थी लेकिन पता नहीं क्यों रीता को देखकर वह उसके साथ संपर्क बनाने की सोचता । तभी रीता प्रो० शील को अपने साथ अपने मौसी के घर गांव ले जाती है । फिर वहां वे दोनों स्कूल के टीचर व शिष्यों के साथ माउण्ट आबू के लिये रवाना होते है । पहाड़ी इलाकों पर जंगली रास्तों से चलते-चलते अचानक दोनों एक दूसरे से टकरा जाता है । उनकी यह टकराहट भावनात्मक स्तर पर होती है लेकिन प्रो० शील का रुका हुआ संयम का बांध हट पड़ता है । तभी रीता को भी इस घटना से बहुत ही ग्लानि होती है । लेकिन शील इस घटना के लिये स्वंय को दोषी तो मानता है लेकिन इसका प्रेरित कार्य का दोष रीता पर देता है । इसमें इसका भी हाथ है यदि ऐसा नहीं होता तो वह उसे एकांत में प्राकृतिक परिवेश में क्यों ले आती । वह कहता है "प्रेम का असली रूप यही है मिस रीता, वह अपने असली रूप में जंगली ही होता है - आदिम और उद्दाम । वह वहीं जाकर ठहरता है । उसके पहले भी सारी परिस्थितियां तो बनावटी और अधूरी होती है - आदर्शवादियों और कायरों द्वारा आरोपित-" 13

फिर रीता शील के घर उससे मिलने आती है । प्रो० शील भी उसके मन से तिक्तता को दूर करता है । वह उससे कहता है कि दूसरों की तरह उस प्रकार का पुरूष नहीं है । वह तो किसी लड़की की तरफ कभी आंख भी उठा कर नहीं

देखता है । जो कुछ तुम्हारे साथ हुआ हैं उसके लिये वह बहुत शर्मिन्दा है । फिर वह अपने घर जाने की तैयारी करता है ।

इस प्रकार यह उप0 प्रो0 और शिष्या के बीच के भावनात्मक सम्बन्धों के व्यवहार पर आधारित है । इस उप0 में गांव का वातावरण को प्रस्तुत किया गया है । इसमें समस्याओं की दृष्टि से कोई समस्याएं नहीं है । लेकिन फिर भी शिक्षा संस्थान में राजनैतिकता दावपेंच के कारण उत्पन्न विध्वंसात्मक वातावरण को प्रस्तुत किया गया है ।

...

सन्दर्भ सूची

01) स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में शिल्प विधान पृ0 - 57

02) बीसवीं शताब्दी - हिन्दी साहित्य के संदर्भ में पृ0 - 265

03) हिन्दी साहित्य का बृहत्त इतिहास पृ0 - 242

04) हिन्दी उपन्यास समाजिक चेतना - पृ0 - 27

05) आजकल - नवम्बर-1960 श्री चन्द्रगुप्त विधांलकार

06) हिन्दी उपन्यास एक सर्वेक्षण पृ0 - 188

07) हिन्दी उपन्यास सौ वर्ष पृ0 - 89

08) हिन्दी उपन्यास अंतरंग पहचान पृ0 - 131

09) हिन्दी उपन्यास महाकाव्य के स्वर पृ0 - 1

10) रात का सफर उपन्यास पृ0 - 91

11) रात का सफर उपन्यास पृ0 - 71

12) बिना दरवाजे का मकान पृ0 - 105

13) आदिम राग पृ0 - 100